विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

ज्येष्ठ २०७४ मई २०१७

ISSN-2321-3981

₹ १५

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

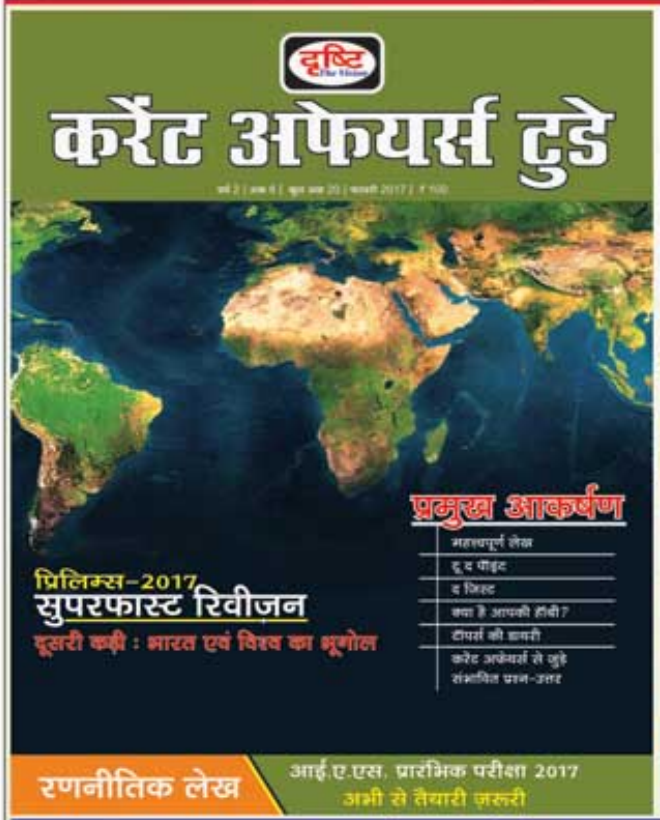

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

सब जानते हैं कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स से नहीं हो सकती। यह भी ज़रूरी है कि आप दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से जुड़ने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अच्छे लेखों को पढ़ते रहें और अच्छी डिबेट्स को सुनते रहें।

आपकी इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं अपनी लोकप्रिय वेबसाइट पर

www.drishtiias.com

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें- (+91) 8130392355

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011-47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

ज्येष्ठ २०७४ ▪ वर्ष ३७
मई २०१७ ▪ अंक११

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

सीधे देवपुत्र के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या –53003591451
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

सदियों पूर्व तुलसी ने लिखा था-

'जाकी कृपा पंगु गिरि लंघई, अन्धे को सब कुछ दर्शाई।
बहिरो सुने मूक पुनि बोलई रंक चले सिर छत्रु छराई ।।

तब यह उनके भक्ति भाव की पराकाष्ठा ही थी और था अपने आराध्य के प्रति चरम सीमा का समर्पण तथा उनकी कृपा से असाध्य एवं असम्भव की भी सुलभता का विश्वास।

ठीक भी है प्रभु कृपा से सब कुछ सम्भव है यह आम आदमी की भी धारणा है।

किन्तु आज मैं इसके एक दूसरे पहलू की चर्चा आपसे कर रहा हूं। प्रभु कृपा की प्रतीक्षा करते करते निठल्ले बैठ रहना- यह भी प्रभु को स्वीकार नहीं हैं। इसीलिए तुलसी महाराज को यह भी कहना पड़ा कि-

'दैव दैव आलसी पुकारा'- अर्थात् भगवान के भरोसे या 'भाग्य में लिखा है' यह मानकर बैठे रहने से प्रभु कृपा मिलती नही। अंग्रेजी में भी ऐसा ही कहा गया है -

God helps Those who helps them selves

प्रत्यक्ष उदाहरण भी यही बताते हैं जिन्होंने प्रयत्न किया उन्होंने अपनी कमियों के बाद भी सब कुछ पा लिया और जो भाग्य के नाम पर रोते रहे वे रोते ही रह गए।

अभी कल ही पढ़ रहा था कि इन्दौर के पास शाजापुर जिले में एक बच्ची जन्म से ही दोनों हाथ न होने के बाद भी सामान्य बच्चों की तरह पढ़ रही है। मूक और बधीर की पढ़ाई के अनेक उदाहरण तो आप भी जानते ही होगें। पैरों की अंगुलियों में या दांतों में ब्रुश दबाकर श्रेष्ठ पेन्टिग या सिलाई करने के उदाहरण भी हमारे सामने हैं। और पंगु होकर भी हिमालय की चोटी पर चढ़ने का आराधना का साहस हमारी आंखें चौधियां देता है।

बच्चों! इतिहास बनाने के लिए सामर्थ्य ही नहीं संकल्प की भी आवश्यकता होती है।

क्रांतिकारी अरविंद घोष को बचाने के लिए गवाह नरेन गोसाई की हत्या करने वाला चारु बोस छोटी ही उम्र का था और एक हाथ और एक पैर उसके बेकार थे। किन्तु अधूरे हाथ पर ही पिस्तोल बांधकर चलाने का अभ्यास किया और पेशी के दिन घसिटते घसीटिते कोर्ट की सीढी तक पहुंचकर नरेन को गोली मार दी। एक कवि ने उसके लिए लिखा-

दिलेरी का नहीं है कुछ डील और डोल से मतलब।
दिलेरी वे दिखाते हैं, जो दिल से वीर होते हैं ।।

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- तलाशी जारी है - भगवतीप्रसाद द्विवेदी ०५
- नोट कभी नहाते नहीं - पवित्रा अग्रवाल ०७
- छँटता हुआ अंधेरा - डॉ. फकीरचन्द शुक्ला १२
- संजू का संकल्प - राकेश चक्र १६
- समय का सदुपयोग - सुनील कुमार माथुर २९
- रक्षक - डॉ. राजीव गुप्ता ३०

कविता

- मजा बहुत आया - रावेन्द्र कुमार 'रवि' १९
- सौर कुटुम्ब - डॉ. चक्रधर 'नलिन' २२
- खेलें खेल - डॉ. राजेन्द्र पंजियार २५
- गर्मी आई - आ. शिवप्रसाद सिंह ४३
- मच्छर मामा - रामानुज त्रिपाठी ४५

संस्मरण

- मीठी यादें - शैवाल सत्यार्थी ४२

आलेख

- महाराणा प्रताप और... -प्रो. त्रिलोकीनाथ सिन्हा ०८
- विश्व प्रसिद्ध है... - डॉ. अनामिका प्रकाश श्रीवास्तव ३२

चित्रकथा

- रसोई घर में बिल्ली - देवांशु वत्स १८
- दांत का दर्द - देवांशु वत्स ४०

बाल प्रस्तुति

- प्यारी नदी - ओजस्विनी गुप्ता १०
- राजू की इच्छा - प्रिया शर्मा २३
- पहेलियां - मनोज बिश्नोई २४
- बताओं तो जानें - अभिनन्दन जैन २८

मेरी गुड़िया - दिव्या शर्मा ३८

स्तम्भ

- आपकी पाती - १०
- गाथा वीर शिवाजी की -प्रो (डा.)जमनालाल बायती २०
- कॅरियर - २६
- हमारे राज्यपुष्प - डॉ. परशुराम शुक्ल ३९
- पुस्तक परिचय - ४४

तलाश जारी है

कहानी : भगवती प्रसाद द्विवेदी

बहुत पहले की बात है। तब कुत्ते और बिल्ली में गाढ़ी दोस्ती थी। दोनों एक ही साथ रहा करते थे। साथ-साथ खाते-पीते, घूमते-फिरते और साथ-साथ ही जीवन का आनंद लिया करते थे। जब कभी कुत्ता अपने साथियों से मिलने बाहर चला जाता था, बिल्ली उसका इंतजार करते-करते थक जाती थी। उसे कुत्ते की अनुपस्थिति में एक पल एक युग सा प्रतीत होता था। कुत्ते को भी बिल्ली के बगैर जीना दूभर सा लगता था।

रोज सबेरे कुत्ता और बिल्ली भोजन की तलाश में निकल जाते थे। दोनों का निवास स्थान जंगल में ही था। बिल्ली जंगल में बसे हुए ऋषि-मुनियों के घरों में घुसकर दूध-दही का पता लगाती और कुत्ता पलक झपकते ही मौका पाकर मटका उठा लाता। फिर दोनों छककर खाते थे और पेट सहलाकर डकारते हुए सैर-सपाटे के लिए निकल जाते थे। यदा-कदा बिल्ली चूहों को पकड़ कर चट कर जाती। कुत्ता भी उन्हें पकड़ने में बिल्ली की भरपूर मदद किया करता था। कभी-कभार कुत्ता भी नदी के किनारे जाकर मछलियां पकड़कर अपनी क्षुधा की तृप्ति कर लेता था। दोनों सुखपूर्वक जीवन यापन कर रहे थे। कभी-कभी बिल्ली 'म्याऊँ-म्याऊँ' गाकर कुत्ते का जी बहलाया करती थी। रात में जब भी जरासी आहट होती, कुत्ता भौंकने लगता और दुश्मनों को पास फटकने तक नहीं देता था।

कुत्ते और बिल्ली की मित्रता जंगल के जानवरों को खटकने लगी। एक दिन एक बंदरिया आयी और बिल्ली को समझाते हुए उसने कहा–''बहन! तुम कहां वनराज शेर की मौसी ठहरीं। कुत्ते के साथ तुम्हारी दोस्ती राजा भोज और गंगू तेली की दोस्ती जैसी लगती है।'' कुत्ता उस दिन अपने शिकार की तलाश में निकल पड़ा था।

बिल्ली ने बात काटते हुए कहा–''बहन! कैसी बातें करती हो? हम दोनों में ऊँच–नीच और बड़े छोटे की भावना कैसी? हम दोनों जंगल के जानवर हैं, एक दूसरे के हितैषी है।''

''वह तो ठीक है बहन! मगर देखती नहीं, शेर जंगल का राजा है। उसे भी तो हमारा हितैषी ही होना चाहिए था लेकिन मौका पाते ही वह हमें चीर–फाड़कर रख सकता है। तुम राजा की हितैषी हो । कुत्ते साथ तुम्हारी मित्रता अच्छी नहीं लगती। खैर, हमें क्या! तुम्हें जो अच्छा लगे, करो।'' कहती हुई बंदरिया हाथ मटकाते हुए चली गई।

बिल्ली के दिल में आंदोलन छिड़ गया। बंदरिया की बात बार–बार उसके दिल–दिमाग में बैठने लगी– कहां राजा भोज और कहां गंगू तेली! आखिर बिल्ली ने एक निर्णय लिया।

तभी कुत्ता आता हुआ नजर आया।

बिल्ली ने उससे कहा ''इतनी देर कहां लगा दी? चलो, अब जरा घूमने चला जाए। मैं कब से तुम्हारा बेताबी से इंतजार कर रही हूं।''

''क्या करूं, आज नदी किनारे निकल गया था मछली पकड़ने। मगर निराशा ही हाथ लगी। बहुत थक गया हूं। अब मुझे आराम करने दो।'' कुत्ता जमुहाई लेते हुआ बोला।

''नहीं, आज तो घूमने चलना ही होगा।'' बिल्ली ने हठ करते हुए कहा।

''देखो, जिद न करो। मैं थका–मांदा आया हूं और तुम...।'' कुत्ते ने बिल्ली को घूरते हुए कहा।

''ठीक है, आज से हमारी तुम्हारी कुट्टी। मैं जब चली।'' बिल्ली मुंह फुलाकर आगे बढ़ती हुई बोली।

कुत्ते ने पीछे–पीछे चलते हुए कहा– ''नाराज मत होओ। मैं भी साथ चल रहा हूं। मगर सुनो तो? उधर कहां जा रही हो? शेर के बाहर निकलने का समय हो गया है। वह शिकार की फिराक में निकला ही होगा।'' कुत्ते ने बिल्ली को आगे बढ़ने से रोकते हुए कहा।

''ऐसी बात मैंने कब कही?'' कुत्ता अब चुपचाप बिल्ली के साथ आगे बढ़ने लगा।

अभी वे दोनों थोड़ी ही दूर आगे बढ़े थे कि शेर उधर से गुर्राते हुए आता नजर आया। बिल्ली तो इसलिए उधर आई ही थी। न रहे बांस, न बजे बांसुरी। वह चटपट एक पेड़ पर चढ़ गई। कुत्ते की तो सिट्टी–पिट्टी गुम हो गई। हे भगवान! अब क्या होगा? उसने बिल्ली को अपनी दोस्ती की याद दिलाई।

मगर वह पेड़ की एक डाल पर आराम से बैठती हुई बोली ''तुम्हारी और मेरी दोस्ती। कहां राजा भोज और कहा गंगू तेली।''

कुत्ता कुछ न बोला। अब उसे वास्तविकता मालूम हो गई कि बिल्ली ठक करके क्यों उसे इधर ले आई थी।

शेर अब बिलकुल नजदीक आ गया था। कुत्ते के दिल की धड़कन तेज हो गई। अब क्या। अब तो जान से हाथ धोना ही पड़ेगा।

तभी एक धमाका हुआ और भाग खड़ा हुआ। कुत्ते ने पीछे मुड़कर देखा। वह एक शिकारी था जिसने शेर को डराने हेतु उस पर गोली दाग दी थी।

शिकारी ने कुत्ते को गोद में उठाते हुए हा– ''डरो मत! अब शेर तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।''

कुत्ते की आंखों में खुशी के आंसू टपक पड़े– ''मैं आपका यह उपकार कभी नहीं भूलूंगा।''

शिकारी कुत्ते को अपने घर ले आया। तभी से कुत्ता उस आदमी के साथ रहने लगा। उसी उपकार का बदला चुकाने के लिए कुत्ता आज भी अपने मालिक की वफादारी से सेवा करता रहता है। मगर वह दुष्ट बिल्ली को हरदम तलाशता रहता है जिसने उसे मौत के मुंह में झोंककर उसके साथ विश्वासघात किया था। उसी का नतीजा है कि बिल्ली कुत्ते को देखते ही नौ दो ग्यारह हो जाती है और कुत्ता उसे मार डालने के लिए झपटता रहता है।

● मीठापुर (बिहार)

नोट कभी नहाते नहीं

कहानी : पवित्रा अग्रवाल

रविवार का दिन था यानि छुट्टी का दिन। परिवार के सब सदस्य एक साथ दोपहर का भोजन कर रहे थे। तभी दरवाजे की घंटी बजी। माँ ने दरवाजा खोला। गुप्ता जी मकान का किराया देने आए थे। माँ ने नोट गिनकर वहीं टेबल पर रख लिए और भोजन करने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि पुत्र संदीप ने टोक दिया – ''यह क्या माँ हमें तो रोज कहती हो पर आज आपने खाने के पहले हाथ नहीं धोये?''

''अभी तो धोकर आई थी तभी किराया लेकर गुप्ता जी आ गए।''

'' मैं भी वही कह रहा हूँ कि रुपए गिनने के बाद आपने हाथ नहीं धोये।''

''तो क्या मैं सारे दिन हाथ ही धोती रहूंगी?''

तभी दादी बोल पड़ीं– ''छोरे यह नोट नहीं लक्ष्मी हैं इसे छूने से हाथ गंदे नहीं होते।

''दादी! ये लक्ष्मी हो या पार्वती पर नोट सब से ज्यादा गंदे होते हैं।

''ऐ छोरा! ऐसे नहीं बोलते लक्ष्मी बड़ी किस्मत से आती है।''

''मैं जानता हूँ दादी! कि रुपए ऐसे नहीं, बड़ी मेहनत से आते हैं... पर यह भी बिलकुल सच है कि अपने में बहुत गंदगी लपेटे होते हैं।'' नटखट पिंकी ने पूछा – ''भाई! वो कैसे?''

पिंकी हर नोट हजारों हाथों का सफर तय करता है। सफाई कर्मचारियों, कचरा उठाने वालों को सब गन्दा गन्दा कहते हैं। पर वह खुद गन्दे नहीं होते उनका काम गन्दा होता है काम की वजह से उनके के हाथ गंदे होते हैं हर महीने उन्हें भी पगार के रूप में रुपये मिलते हैं और वे उन्हीं गंदे हाथों से लेकर जेब में रख लेते हैं और जब उन्हीं रुपयों से खरीदते हैं।

''इसी तरह हर नोट गंदे हाथों, बीमार हाथों से गुजरते हुए लम्बी यात्रा करते हैं नोट पर लिखा तो नहीं होता कि वह कैसे कैसे हाथों से गुजरा है... अब देखो पिंकी तुम को कितना जुकाम हो रहा है...आँखा नाक से पानी भी बह रहा है...अभी माँ तुम को रुपए देकर कहेंगी कि पिंकी रुपये अलमारी में रख आओ। हाथ पर लगे कीटाणु इन रुपयों में लग जायेंगे कि नहीं?''

''यह बात तो सही है भैया, यह तो मैंने एक दो उदाहरण दिए हैं, इस तरह यह सैकड़ों तरह के कीटाणु साथ लेकर चलते हैं। हम जो रोज दिन में बहुत बार हाथ धोते हैं, रोज नहाते हैं पर क्या नोट भी नहाते हैं?''

''अरे छोरा! तू ने तो हमारी आँखें खोल दीं... इस तरह से तो हमने कभी सोचा ही नहीं था।''

आप ही नहीं दादी बहुत कम लोग इस बारे में सोचते हैं, इसीलिए पिंकी मैं तुम सब को ठेलों पर चाट–पकौड़े खाने से रोकता हूँ। हाँ भैया! वह जिन हाथों से रुपये लेते हैं उन्हीं से गोल गप्पे चाट पकोड़े बना कर खिलाते रहते हैं।''

''हाँ बच्चों आज छोरे ने बहुत अच्छी बातें बताई हैं। हम बस आगे से इस का ध्यान रखेंगे।

पिंकी ने आखें मटकाते हुए कहा– ''दादी इसी बात पर अब आज से आप भैया को छोरा नहीं संदीप कह कर बुलाया कीजिए।''

''ठीक है छोरी!'' – सब हँसने लगे थे।

• हैदराबाद (आ.प्र.)

।। आलेख ।।

महाराणा प्रताप और वनवासी सेनानी

आलेख : प्रो. त्रिलोकीनाथ सिन्हा

मध्यकालीन भारत के राजपूताना के राजे महाराजाओं के शौर्य, स्वाभिमान, देशभक्ति, त्याग, स्वातंत्र्य रक्षा के लिए सतत संघर्षशील गाथाओं से इतिहास के पन्ने के पन्ने भरे पड़े हैं। उनमें भी मेवाड़ राज्य के महाराणा वंश के विशेषकर महाराणा प्रताप के शौर्य-पराक्रम संबंधी पृष्ठ तो स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं। सूर्यवंशी बप्पा रावल-गुहिल ने आज से १४७० वर्ष पूर्व सन् ५४७ ईसवी में मेवाड़ राज्य में महाराणा राजवंश की स्थापना की थी। इस प्रसंग में विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि सम्पूर्ण विश्व के राजवंशों के इतिहास में मेवाड़ का महाराणा राजवंश एकमात्र ऐसा राजवंश है जिसने एक निश्चित भू-भाग (मेवाड़) पर १५ अगस्त १९४७ के स्वतंत्रता प्राप्ति तक निरन्तर १४ सौ वर्षों तक ७५ पीढ़ियों तक एक छत्र राज्य किया था।

वह मेवाड़ राज्य भील जनजाति का बहुसंख्या वाल विशेष क्षेत्र है। महाराणा लोग अपनी भील प्रजा पर पुत्र की भाँति स्नेह, सदाशयता और सौहार्द्र का व्यवहार करने के लिए विख्यात थे। तभी तो पूरी की पूरी भील जनजाति अपने महाराणाओं के लिए प्राण-पण से निष्ठापूर्वक समर्पित भाव से जीवन भर जुटे रहते थे। वे राज्य के महाराणाओं की रक्षा, सम्मान व प्रतिष्ठा के लिए सदैव प्राण की बाजी लगाकर संघर्षरत रहा करते थे।

महाराणा राजवंश के संस्थापक बप्पा रावल के ९७४ वर्ष बाद सन् १५२१ ईसवी से लेकर सन् १५९७ के बीच सिंहासन रूढ़ ४२वें वंशज महाराणा प्रताप मुगलों के विरुद्ध स्वातंत्र्य रक्षा हेतु पराक्रम एवं स्वाभिमानपूर्ण संघर्ष की गाथा के कारण **हिन्दू कुल सूर्य** की उपाधि से इतिहास में विभूषित हैं। उनकी भील जनजाति की प्रजा वस्त्रविहीन बदन के रहते हुए भी अपने तीर कमानों की बौछार में मुगल सैनिकों सहित उनके तोप गोलों से लैस सेनापतियों तक के छक्के छुड़ा दिया करते थे। ज्ञातव्य है कि हल्दीघाटी युद्ध में ८ हजार भीलों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। इतिहास प्रमाण है कि हल्दी घाटी के युद्ध में पराजय की आशंका से पीछे हटकर महाराणा प्रताप ने गोगुण्दा को राजधानी बनाकर क्षेत्र के वनवासी भीलों द्वारा संरक्षित अपने जीवन के अन्तिम क्षण अगले १८ वर्षों तक राजकाज चलाया था। मुगल बादशाह अकबर जब राणा प्रताप को हल्दी घाटी युद्ध में जीवित या मृत न पकड़ पाने के बाद अपने विश्वस्त सरदार मानसिंह को भारी सेना सहित गोगुन्दा का घेरा डालकर प्रताप को पकड़ने का जिम्मा देकर आगरा लौट गया तब महाराणा प्रताप के वीर लड़ाके भीलों ने लगातार ४ महीने तक छापामार युद्ध से मानसिंह सहित उनकी सेना के नाम में दम कर दिया था। उन्होंने अपने पूरे क्षेत्र में मानसिंह को अकबरी सेना के लिए अनाज खाद्य सामग्री तथा पानी की

आपूर्ति ठप करके उन्हें मरणासन्न स्थिति में पहुँचा दिया था। उन भीलों ने मुगल सैनिकों को भुखमरी की स्थिति आने पर अपने घोड़ों व ऊँटों को मारकर उनका मांस खाने को विवश कर दिया था। इतना ही नहीं तो उन भीलों ने घेरा डाले हुए प्रताप के स्वजातीय मानसिंह को जीवित पकड़कर महाराणा से उन्हें प्राणदण्ड देने का अनुरोध किया किन्तु हिन्दू राजाओं के आदर्श के प्रतीक राणा प्रताप ने हारे थके मानसिंह को प्राण दान देकर आगरा वापस जाने दिया। इतनी कुशल रणनीतिक व शौर्यवान थी मेवाड़ की भील जनजाति।

इतिहास गवाह है कि महान कहे जाने वाले मुगल बादशाह अकबर के जीवन काल में ही अपने भील प्रजा के बल पर राणा प्रताप ने प्रतिष्ठा के प्रतीक चित्तौड़गढ़ के अतिरिक्त मेवाड़ राज्य के सभी किले मुगलों के अधिकार से छीनकर देश का व राजपूतों का मानवर्धन किया था अन्ततः राणा प्रताप को नतमस्तक करने की टीस मन में लिए मुगल बादशाह अकबर अपने बेटे सलीम को यह काम सौंप कर अशान्त चित्त कब्र में सो गया। यह सब हुआ राणा प्रताप के राजनिष्ठ भील सैनिक प्रजा के समर्पित श्रद्धा के ही कारण। भीलों के इतिहास में राणा की रक्षा में प्राण समर्पित करने वाले पुंजा भील का नाम अमर रूप से अंकित है। ज्ञातव्य है

कि १८ जून सन् १५७६ को हुए हल्दी घाटी युद्ध में पुंजा भील ने ही महाराणा प्रताप की सेना का नेतृत्व किया था तथा वहाँ से पलायन करने के बाद चावण्ड को राजधानी बनाकर पुंजा भील के सहायता से ही राणा प्रताप ने १८ वर्षों तक मेवाड़ का शासन सूत्र संभाला था।

इन भीलों की राणा राजवंश में इतनी प्रतिष्ठा थी कि उनके राज चिन्ह प्रकाशमान सूर्य के एक ओर एक राजपूत तो दूसरी ओर एक भील का चित्र अंकित है। यह महाराणा की ओर से भील प्रजा के त्याग बलिदान के पुरस्कार का ही तो प्रतीक है। मेवाड़ राज्य की ओर से अनेक भील सरदारों को जागीरें दी गई थीं। मेवाड़ राज्य में भीलों को जंगल के सभी अधिकार प्राप्त थे। उनके ऊपर किसी प्रकार का अतिरिक्त कर नहीं लगाया गया था। वे जंगल में अपना मकान बनाने, कृषि कार्य व भोजन आदि बनाने के लिए चाहे जितनी लकड़ी निःशुल्क काट सकते थे। तभी तो भील प्रजा उनके राज्य में सुखी थी तथा राजवंशों के लिए सदैव समर्पित रहा करती थी।

भील जनजाति के लोग मेवाड़ क्षेत्र में हजारों वर्षों से रहते आए हैं। एक प्रकार से वे ही वहाँ के मूल निवासी हैं। इनकी जनसंख्या वर्तमान में ४० लाख से अधिक ही है, जो यद्यपि सम्पूर्ण मेवाड़ क्षेत्र में बसे हैं किन्तु विशेषकर इनकी बस्तियाँ पर्वतीय क्षेत्रों में अधिक है। ये शिकारी जाति के होने के कारण हर समय तीर–कमान से लैस रहते हैं। ये बड़े स्वतंत्र प्रवृत्ति के तथा सीधे सरल स्वभाव वाले होते हैं। यह कठिन परिश्रम करने वाली जनजाति है जो अधिकतर श्रमिक का कार्य करते हैं। इनकी वीरता का प्रमाण इनका सभी महाराणा राजवंशों की रक्षा में सन्नद्धता से प्रकट है। गुरिल्ला–छापामार युद्ध में यह जनजाति अत्यंत निपुण रही है।

● **वाराणसी (उ.प्र.)**

|| बाल प्रस्तुति ||

प्यारी नदी

कविता : ओजस्विनी गुप्ता

छोटी सी हमारी नदी टेढ़ी मेढ़ी धार,
गर्मियों में घुटने भर भिगो कर जाते पर।
पार जाते ढोर-ढंगर, बैलगाड़ी चालू।
ऊंचे हैं किनारे इसके पाट इसका ढालू
है झकाझक बालू कीचड़ का न नाम
काँस फूले एक पार उजले जैसे घाम।
दिनभर किचपिच-किचपिच करती मैना डार-डार
रातों को हुआँ-हुआँ कर उठते सियार।
अमराई दूजे किनारे और ताड़ वन
छाँहों छाँहों बाम्हन टोला बसा है सघन।
कच्चे-बच्चे धार कछारों पर उछल नहाले
गमछों-गमछों पानी भर-भर अंग-अंग पर डालें।

● मुरैना (म.प्र.)

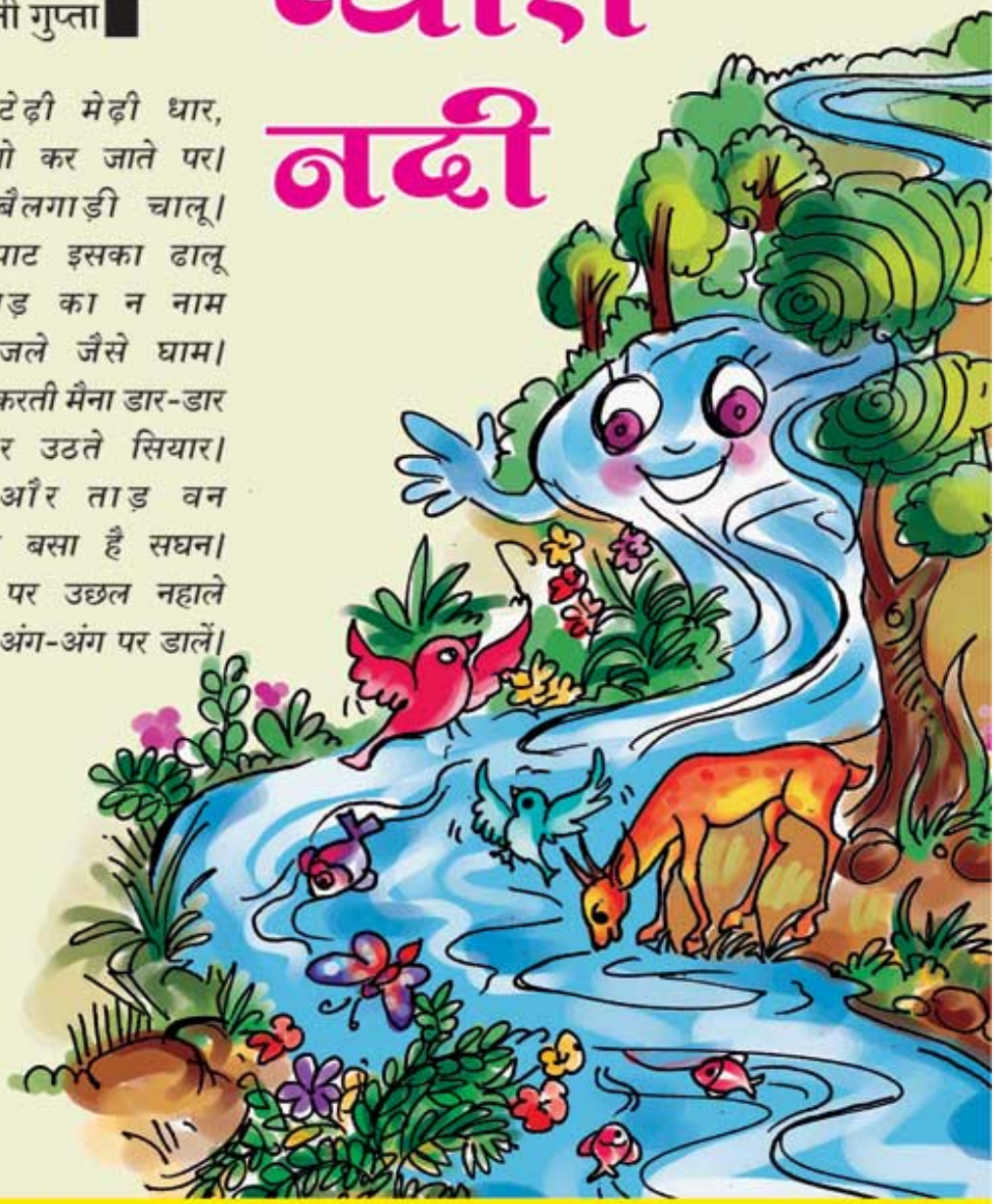

आपकी पाती

देवपुत्र जनवरी अंक मिला। यह बड़ी प्रसन्नता का प्रसंग है कि बारह मास प्रत्यक अंक सृष्टि से भी गुलमोहर सी मनोहर धरोहर के समान रहती है। मनोरंजन और ज्ञानवर्द्धन का संगम अपने आप हृदयंगम होता है। चित्र सज्जा से रचनात्मक सामग्री के साथ पुष्य वर्णन जेसा आकर्षण रहता है। बच्चों से लेकर बड़ों तक के लिए यह पत्रिका फुलवारी सी प्यारी है।

जनवरी अंक में बादल की सैर, बहादुर बेटी, भारत माँ का परिवार, वीर सिपाही, जंगल में क्रिकेट, हार नहीं मानूंगा, जैसा पिता वैसा पुत्र, भलाई की जीत, शपथ आदि प्रेरणादायी है।

● बलराम पाटीदार कलालिया (म.प्र.)

मनभावन सुगंध में

नई पितांबरी®

अब पाँच धातुओं के लिए !

तांबा → पीतल → ॲल्युमिनियम → लोहा → चांदी

१०, ३०, ५०,१००, २००, ५०० ग्रा. और १ किलो में उपलब्ध

4 in 1

पितांबरी® देवभक्ती® अगरबत्ती

फूलों की 'प्राकृतिक' सुगंध
जो खुशियाँ फैलाएं।

Made With NATURAL Extract From Pitambari Dapoli Farms

22 ,100 ग्राम, 4 in 1 & 7 in 1 में उपलब्ध

CIN: U24239MH1989PTC051314.

Pitambari Products Pvt. Ltd.

Thane: 022 - 6703 5555, CRM No.: 022-6703 5564, 5699 Toll Free: 180030701044

For Online Purchase www.pitambari.com/shop www.pitambari.com

छँटता हुआ अंधेरा

कहानी : डॉ. फकीरचंद शुक्ला

रोहन की माँ–पिता प्रायः उसे टोकते रहते थे मगर फिर भी न जाने क्यों रोहन अपने को रोक नहीं पाता था। सप्ताह में जिस दिन भी टेलीविजन पर डरावनी फिल्म का कार्यक्रम आता तो वह जैसे टी.वी. से चिपक जाता था। उस कार्यक्रम में भूत–प्रेत विचित्र प्रकार के कारनामे किया करते थे। कभी हवा में तस्वीर उड़ने लग जाती, कभी पता ही नहीं चल पाता कि घर में कहीं से खून बिखरा होता। घर के दरवाजे खिड़कियाँ बेशक भीतर से सांकल भी लगी होती, स्वयं ही चीं–चीं की आवाज के साथ खुल जाते थे। कई बार इस प्रकार के दृश्य टी.वी. पर देखते हुए रोहन को डर भी लगता था, मगर घर पर माँ–पिताजी की मौजूदगी उसे डर से बचा लेती थी।

माँ तो ज्यादा नहीं टोकते थे मगर पिता तो जैसे आग बबूला हो जाते थे– ''अरे कोई अच्छा सा धारावाहिक भी देख लिया कर। यूं ही बे सिर पैर के कार्यक्रम देखता रहता है। लोग चांद के बाद मंगल पर भी पहुंच गये हैं और यह लोग विज्ञान के इस युग में भूत–प्रेतों की कहानियां दिखाते हैं।'' पिताजी को टी.वी. वालों पर भी खीझ आती थी।

रोहन को पिताजी की बातें अजीब सी लगतीं। अगर भूत–प्रेत नहीं होते तो क्या टी.वी. वाले मूर्ख हैं जो इस प्रकार के कार्यक्रम दिखाते हैं। अगर इस प्रकार की शक्तियाँ न हों तो वस्तुएँ स्वयं ही एक स्थान से दूसरी जगह कैसे पहुंच जाती हैं। बंद किवाड़ स्वयं ही कैसे खुल जाते हैं, और फिर भला यह कैसे हो सकता है कि आस–पड़ोस के सभी घरों में तो बिजली हो और मात्र उस घर की ही बिजली गुल हो जाए जिस घर में भूत–प्रेत आते हों।

माँ–पिताजी के रोकने के बावजूद भी शायद ही कभी रोहन ने इस प्रकार का धारावाहिक देखने से गुरेज किया हो।

...और आज तो मानो उसकी लाटरी निकल आई थी। पिताजी बाहर गए थे तथा माँ की सुबह से तबीयत ठीक नहीं थी। वह साथ वाले कमरे में दवाई लेकर लेटी थीं। आज भला उसे किसने टोकना था। वह देर तक टी.वी. देखता रहा था। पहले चित्रहार देखा और उसके बाद उसने अपना मनपसंद कार्यक्रम हॉरर शो अर्थात् डरावना धारावाहिक देखा।

मगर धारावाहिक समाप्त होते ही अनायस उसे याद आया कि उसने आज तो गृहकार्य भी नहीं किया था। कल तो फिजिक्स वाले आचार्य जी ने कापियाँ जाँचनी है। फिजिक्स वाले आचार्य जी के पास कोई बहाना नहीं चलता । उनका तो सीधा उसूल है– या तो गृहकार्य करके लाओ या फिर पिटाई करवाओ। उनका एक थप्पड़ ही पूरा जबड़ा हिलाकर रख देता था।

लेकिन अब वह क्या करे। उसको तो नींद आने लगी थी। अचानक उसे ख्याल आया कि कोई बहाना बना ले तथा विद्यालय न जाए। मगर फिर भी बहाना नहीं चलता था, क्योंकि प्राचार्य महोदय तब तक अर्जी स्वीकार नहीं करते जब तक कि उस पर पिताजी के हस्ताक्षर न किए हों। लेकिन पिताजी भी किसी से कम नहीं। वह तो तब भी उसकी अर्जी पर हस्ताक्षर नहीं करते जब खांसी जुकाम हो जाने पर वह विद्यालय की छुट्टी करना चाहता हो। और अब तो पिताजी बाहर है हस्ताक्षर कौन करेगा? माँ के हस्ताक्षरों को प्राचार्य जी मान्य नहीं करते। क्योंकि उनका कहना है कि माँ से तो बच्चे जैसे तैसे हस्ताक्षर करवा ही लेते हैं।

खैर! और कोई चारा न देखकर वह गृहकार्य करने बैठ गया। लेकिन अभी उसे पढ़ते हुए थोड़ा ही समय हुआ था कि उसे यूं लगा कि जैसे कोई उनके

कमरों के पर्दों को खींच रहा हो। उसने चौंककर एकदम पर्दों की ओर देखा। लेकिन वहां तो कोई भी न था। उसे लगा कि शायद उसे भ्रम हुआ कि किसी ने पर्दे खींचे हैं। वह पुनः अपना गृहकार्य करने लगा।

कॉपी पर लिखते हुए अचानक उसकी नजर रोशनदान की ओर घूम गई तो वह भयभीत हो गया। उसे यूं लगा जैसे रोशनदान में से कोई भीतर झांक रहा हो। मारे डर के उसे कंपकंपी छूट गई थी। कहीं कोई भूत–प्रेत ही ना आ गया हो। भूत–प्रेत तो कहीं से भी आ सकते हैं। उसने स्वयं एक सीरियल में देखा था कि किस प्रकार बंद दरवाजों तथा खिड़कियों में से भीतर आकर भूत उस घर की कीमती वस्तुएँ तोड़ गया था। भूत के लिए कहीं भी आना–जाना कठिन कार्य ना था। फिर उनके रोशनदान का तो शीशा भी टूटा हुआ था।

एक दो बार उसके मन में आया कि साथ वाले कमरे में से माँ को पुकार ले। मगर एक तो माँ अस्वस्थ थीं, दूसरे उसने यह सोचकर नहीं पुकारा कि कहीं माँ उसे डरपोक न समझ लें।

मारे डर के उसे ठंडा पसीना आने लगा था। मगर फिर भी वह हिम्मत करके उठा तथा बाहर वाले कमरे की लाईट जला दी। उसने सहमे हुए रोशनदान की ओर देखा। मगर वहां तो कोई भी न था। उसने मन ही मन स्वयं को दिलासा दिया कि वह तो बेवजह ही डर रहा था रोशनदान में से तो कोई भी नहीं झांक रहा था।

वह फिर से अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गया। लिखने के लिए जब उसने अपना पेन उठाना चाहा तो वह तो जैसे स्तब्ध रह गया। लाईट जलाने के लिए जब वह उठा तो उसने अपना पेन कॉपी पर खुला ही छोड़ दिया था। मगर अब उसका पेन पास ही पड़े ज्योमेट्री बाक्स में पड़ा था। है...ऽऽ यह कैसे हो सकता है? उसे भली प्रकार से याद है कि उसने कॉपी पर पेन खुला ही छोड़ दिया था। फिर यह पेन बंद कैसे हो और ज्योमेट्री बाक्स में कैसे चला गया? अवश्य ही इस कमरे में कोई

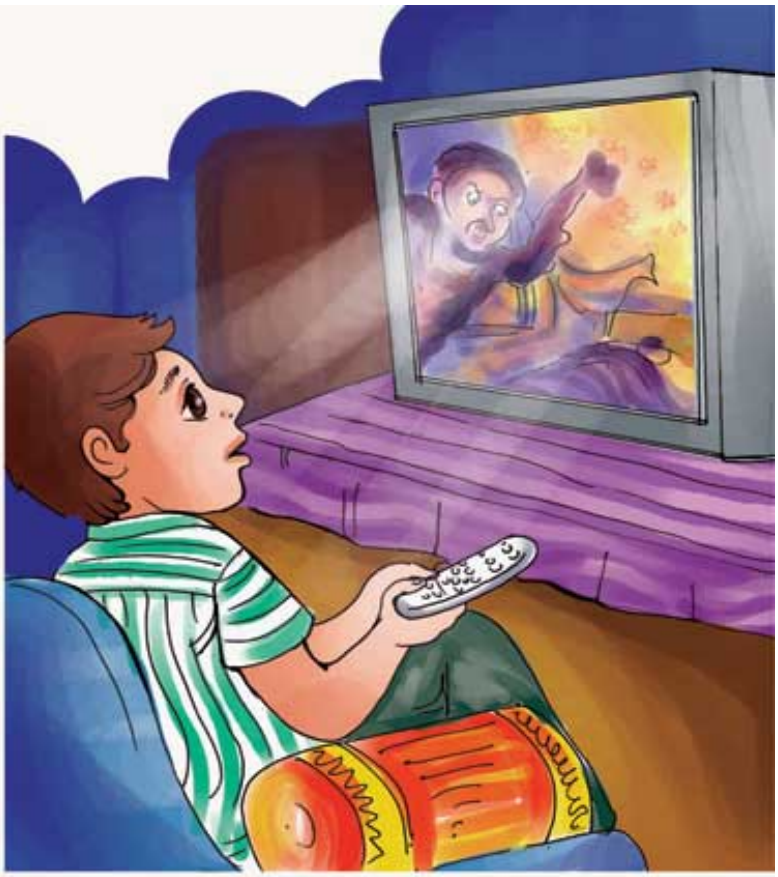

भूत–प्रेत है, वरना वस्तुएं अपने स्थान से कैसे हिल सकती हैं? यूं सोचते हुए अनायास ही उसकी नजर ऊपर की ओर चली गई तो उसकी तो मानो चीख ही निकल गई थी। रोशनदान में से बड़ी आँखों तथा लम्बे–लम्ब दांतों वाला एक चेहरा उसकी ओर देख रहा था।

मारे डर के रोहन चीख पड़ा– ''माँ''

उसकी चीख सुनकर माँ झट से उसके कमरे में चली आई– ''क्या हुआ रोहन, चीख क्यों रहा हैं?''

मगर रोहन तो झट से माँ से लिपट गया था।

''क्या हुआ? डर क्यों गया?'' माँ ने पूछा।

मारे डर के कुछ देर तक तो रोहन कुछ बोल ही ना पाया। फिर उसने कांपती आवाज में कहा– ''माँ, रोशनदान में से भूत झांक रहा था।''

''खाक झांक रहा था।'' उसकी बात सुनते ही माँ ने थोड़ा गुस्से में कहा– ''टी. वी. में ऊल–जुलूल देखता रहता है तब तो किसी की बात नहीं

सुनता...अब डर लग रहा है...चल उधर मेरे कमरे में सो जा..''

''पर माँ मेरा तो अभी गृहकार्य बाकी है।'' रोहन ने झिझकते हुए कहा।

''तो पहले गृहकार्य कर लेना था... टेलीविजन बाद में देख लेता... माँ की आवाज में गुस्सा साफ झलक रहा था– ''सो जा अब चुपचाप। मेरी तबीयत तो पहले ही ठीक नहीं है। प्रातः जल्दी उठकर कर लेना अपना काम...''

रोहन चुपचाप माँ के साथ दूसरे कमरे में चला आया। अब और कोई चारा भी तो न था उसके पास। मारे डर के वह अभी भी कांप रहा था। ऐसी अवस्था में वह कैसे पढ़ सकता था। इसलिए वह माँ वाले कमरे में जाकर सो गया। मगर रात भर उसे अजीब–अजीब से डरावने सपने आते रहे। कभी लगता कि चलते हुए किसी ने उसकी बाजू पकड़ कर जोर से झटका दिया हो। कभी लगता कोई उसके बिस्तर के पास खड़ा जोर–जोर से हंस रहा हो।

इस घटना को कई दिन हो गए थे। मगर उस दिन के पश्चात् फिर से रोहन के साथ पहले जैसा कुछ नहीं घटा था।

उस दिन विद्यालय में किसी विद्वान व्यक्ति ने भाषण दिया था। अंधविश्वास की बातें करते हुए उन्होंने कहा था कि विज्ञान के इस युग में आजकल भी लोग बहमों तथा भ्रमों में जकड़े हुए हैं। उन्होंने भूत–प्रेतों के बारे में भी बात की थी। उन्होंने कहा था कि भूत–प्रेत का कोई अस्तित्व नहीं। यह तो मात्र मन का भ्रम होता है।

रोहन को उनकी बातें विचित्र लगीं। अगर भूत–प्रेत नहीं होते तो दूरदर्शन वाले यूं ही धारावाहिक क्यों दिखाते रहते हैं? मगर उस महानुभाव ने जब इस प्रकार की बातें उदाहरण देकर समझाई तो रोहन को भी लगा था कि भूत–प्रेत तो मनघड़न्त बातें है। इनका कोई अस्तित्व नहीं होता।

इसी प्रकार कई दिन गुजर गए।

पिछली बार चाहकर भी रोहन हॉरर शो नहीं देख पाया था क्योंकि उस दिन बिजली गुल हो गई थी।

आज माँ–पिताजी को किसी की शादी में जाना था। शाम का जाते समय उन्होंने रोहन से पूछा था– ''क्यों भई, हमारे साथ चलना है या घर पर ही रहना है।''

''नहीं, मैं तो घर पर ही रहूंगा। मेरा गृहकार्य रहता है।'' रोहन ने कहा था। मगर मन ही मन वह खुश था क्योंकि आज टेलीविजन पर उसका मनपसंद धारावाहिक हॉरर शो आना था और माँ–पिताजी के घर पर ना होने से वह चित्रहार भी देख सकता था।

''सोच ले, जैसे तेरी इच्छा हैं हमारे साथ जाना है तो चल, फिर ना कहना कि लेकर नहीं गए।'' पिताजी ने एक बार फिर उससे पूछ लिया।

''नहीं पिताजी, मुझे काफी गृहकार्य मिला है।''रोहन ने कहा– ''फिर घर भी तो खाली नहीं छोड़ जा सकता।''

''ओ रहने दे बच्चू... ज्यादा समझदार न बन। सीधी तरह क्यों नहीं कहता कि हमारे जाने के पश्चात् टी.वी. देखना है।'' पिताजी ने हंसते हुए कहा।

''नहीं पिताजी...सच कहता हूं... मेरा गृहकार्य रहता है।'' रोहन ने पुनः पहले की तरह ही कहा।

''पीछे से अकेला डरेगा तो नहीं?'' माँ के यू कहने पर पिताजी हंस दिए थे और रोहन भी मुस्कुरा दिया था।

मुस्कराते हुए ही रोहन बोला – ''आप भी अजीब बात करती हो माँ, मैं कोई बच्चा हूं?''

''मुझे मालूम है तुम कितने बड़े हो गए हो।'' कहते हुए माँ और पिताजी चले गए।

रोहन ने तुरंत भीतर से कमरा बंद कर लिया और अगले ही पल टी.वी. चालू कर दिया।

यद्यपि अभी चित्रहार ही चल रहा था मगर रोहन

को किसी की पदचाप सुनाई दी और अगले ही पल उसे यूं लगा जैसे कोई कमरे का दरवाजा धीरे-धीरे खोल रहा हो। उसने झट से टी.वी. की आवाज कम कर दी तथा ऊंची मगर सहमी हुई आवाज में पूछा- ''कौन है?''

मगर कोई जवाब नहीं मिला। रोहन ने एक बाद फिर पुकारा लेकिन फिर भी कोई जवाब ना मिला। हो सकता है कि उसे भ्रम हुआ हो, सोचकर रोहन ने पुनः टी.वी. की आवाज बढ़ा दी।

अब उसका मनपसंद धारावाहिक हॉरर शो प्रारम्भ हो गया था। धारावाहिक के प्रथम दृश्य में ही घर के बंद दरवाजे अपने आप एकदम खुल जाते हैं तथा दीवार पर एक बड़ा सा साया नजर आता है। वह साया कभी इस ओर तो कभी उस ओर घूमने लगता है। अचानक रोहन की नजर सामने वाी दीवार की ओर घूम गई तो उसकी तो जैसे बोलती ही बंद हो गई। सामने दीवार पर एक साया हिल रहा था। कभी वह तेज-तेज हिलने लगता तो कभी धीरे हो जाता। रोहन तो जैसे परेशान हो गया था। वह स्तब्ध सा दीवार की ओर देखने लगा। उसकी सांस भी धौंकनी की तरह चलने लगी थी।

लेकिन जल्दी ही उसने अपने डर पर काबू पर लिया था। उसे अनायास ही समझ आ गया था कि सांइस वाले आचार्य जी प्रायः कहा करते थे कि भूतप्रेत नाम की कोई चीज नहीं होती। यह तो मात्र मन का बहम है। उसे थोड़ा हौसला हुआ तो वह सोचने लगा और उसे विज्ञान आचार्य जी का कथन याद आ गया कि जब किसी पारदर्शी वस्तु पर प्रकाश पड़ता है तो उस वस्तु का साया बन जाता है क्योंकि प्रकाश की किरणें उस वस्तु में से गुजर नहीं सकतीं। वह अपने स्थान से उठ बैठा। उसने इधर-उधर देखा। साये वाली रोशनी खिड़की में से आ रही थी। जब उसने खिड़की के पास जाकर देखा तो वह स्वयं ही हंस

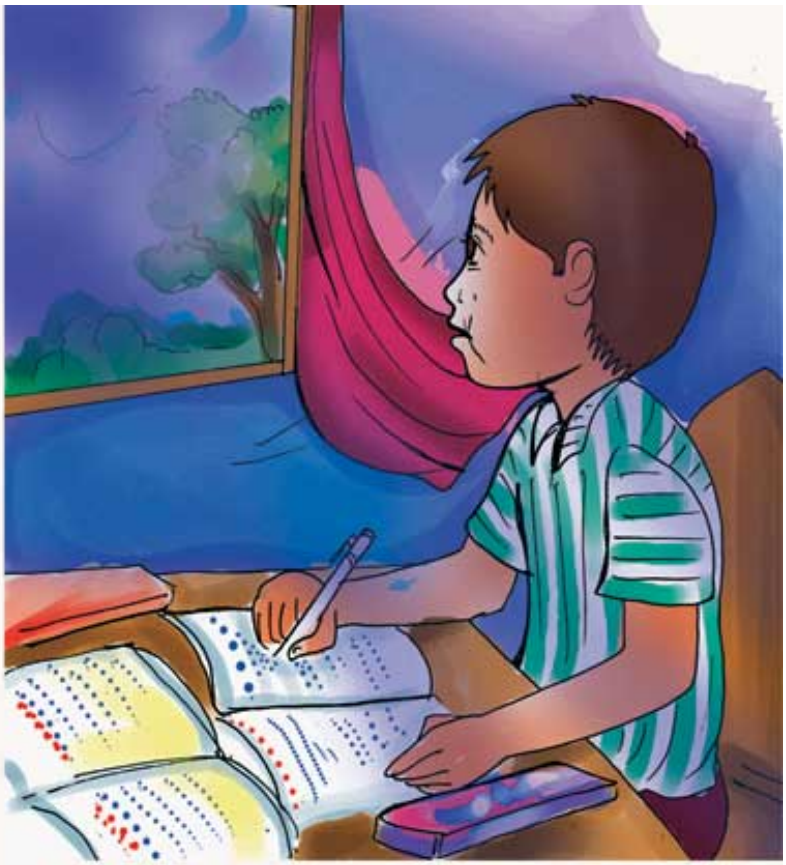

पड़ा। धत्त तेरी की, मैं तो यूं ही डर गया था। बाहर बिजली के खम्बे का प्रकाश उनके घर के बाहर लगे पेड़ की शाखाओं पर पड़ रहा था। जब हवा चलती तो शाखाएं भी हिलने लगतीं, जिससे साया भी हिलते लगता।

रोहन मन की मन बहुत प्रसन्न हुआ कि वैज्ञानिक जानकारी के कारण उसने अपने डर पर नियंत्रण कर लिया था और यह भी प्रमाणित हो गया था कि भूत-प्रेत मात्र मन का बहम होता है। वास्तव में उनका कोई अस्तित्व नहीं होता।

रोहन ने मन ही मन यह निश्चय भी कर लिया था कि आज के पश्चात वह ऐसे बिना सिर पैर के तथा वास्तविकता से कोसों दूर धारवाहिक नहीं देखा करेगा। अब तो वह वैज्ञानिक सोच को विकसित करने वाले तथा ज्ञान में वृद्धि करने वाले कार्यक्रमों को ही प्राथमिकता देगा ताकि अज्ञानता से भरे उसके अंधकारमय जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैल सके।

● **लुधियाना (पंजाब)**

संजू का संकल्प

कहानी : राकेश चक्र

संजू का खेलने में खूब मन लगता, लेकिन पढ़ने के नाम पर उसके प्राण सूख जाते। अंग्रेजी, विज्ञान, संस्कृत और हिन्दी जैसे विषय भी उसे पहाड़ पर चढ़ने के जैसे लगते। कक्षा और मोहल्ले के शैतान बच्चे उसके परम सहपाठी थे। घर में सबसे बड़ा होने के कारण उस पर माँ का लाड़-दुलार कुछ अधिक ही बना रहता, पिता की वक्र दृष्टि का भी उस पर कोई असर नहीं होता था। इसके पिता उसकी पढ़ाई को लेकर काफी चिन्तित रहते। अक्सर डाँट-डपटकर पढ़ने के लिए प्रेरित भी करते, लेकिन प्रेरित करने का ढंग कुछ अनोखा, भय की शक्तिबद्ध होने के कारण कक्षा आठवीं तक उसके मन-मस्तिष्क में ये संकल्प कभी नहीं आया कि उसे मन लगाकर पढ़ना है तथा कक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने हैं। एक तरफ माँ का लाड़-प्यार तथा तो दूसरी तरफ पिता की डाँट-डपट और मारपीट ने उसे पूरी तरह चिकना घड़ा बना दिया था। कक्षा आठवीं तक पहुँचते-पहुँचते वह कई बार अनुत्तीर्ण हुआ। जब-जब वह अनुत्तीर्ण हुआ, तब-तब उसके पिता ने खूब डाँटा और मारपीट की। उसकी माँ ने ही उसे पिता के क्रूर हाथों से बचाया तथा पिता को ताने-उलाहने देने में भी कोई कमी न रखी तथा ये ही कहा कि बच्चे तो फेल-पास होते ही रहते हैं...पढ़ लिखकर कहीं न कलेक्टर हो रहा है...।

बच्चा तो गीली मिट्टी का लौंदा है, जिसको मन चाहा आकार दिया जा सकता है, बशर्ते मूर्तिकार अपनी कला-कौशल में दक्ष हो।

जब वह कक्षा आठवीं में फेल हुआ था, तभी उसकी माँ टिटनेस की बीमारी से ग्रसित हो गई। घर की सब जमा पूँजी बीमारी में लग गई। लेकिन ईश्वर कि कृपा से बच गई। अपनी बहन भाईयों में संजू सबसे बड़ा था। उसकी दो बहनें तथा एक भाई पढ़ने में सामान्य थे, लेकिन कभी अपनी कक्षा में अनुत्तीर्ण न होते थे। इसलिए पिता की डाँट-फटकार भी उन्हें कभी न मिलती।

संजू आठवीं कक्षा का अनुत्तीर्ण का परीक्षा परिणाम लेकर जैसे ही घर आया, तब वैसे ही उसके पिता ने पिटाई कर ऐसा स्वागत किया कि वह बेहोश हो गया। उसकी बीमार माँ, उसके भाई-बहिन तथा अड़ोसी -पड़ोसी सब एकत्र हो गए। उन्होंने ने उसे नजदीक के राजकीय अस्पताल में भर्ती कराया। उसके पिता क्रोध की अग्नि में ऐसे जल गए कि उन्हें अपने पुत्र पर कोई रहम नहीं आया। लेकिन पाश्चाताप की अग्नि किसी अनहोनी की आशंका से भयभीत करती रही। आँखें सजल हो गईं, लेकिन आत्म ग्लानि और उनके अहंकार ने उन्हें अस्पताल जाने से रोक दिया।

क्रोध का जलजला अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु को भी क्षति पहुँचाने में दया नहीं बरतता है। वह स्वयं को तो जलाता ही है, साथ ही दूसरों को भी जलाकर अतृप्त तृप्ति का अहसास कराता है।

संजू को जब होश आया तो उसने अपने आपको अस्पताल में पाया। उसके संगी-साथी और अड़ोस-पड़ोस के चाचा और ताऊ आदि आस-पास जमा थे। सबके चहेरे पर किसी अनहोनी की आशंका से उबर चुके थे। सबके चेहरों पर मुस्कान की किरण खिल गई। संजू के मन में माँ की बीमारी...छोटे भाई-बहनों तथा संगी-साथियों का प्यार दुलार... पिता की क्रूर छवि भी अपनी असफलता की कमजोर नींव में दबकर एक नए संकल्प की ओर प्रेरित करने लगी।

लेकिन पूरी तरह मन अभी पिता की क्रूरता को भुलाने के लिए तैयार नहीं हो रहा था। क्या कोई पिता अपने पुत्र को इस तरह से पीटे कि पुत्र बेहोश हो जाए... क्या पिता को अच्छी तरह समझाना नहीं चाहिए था... ऐसे जीने से तो न जीना ही अच्छा है...।

वह लघुशंका के बहाने शौचालय की ओर गया और वहाँ से कस्बे के दक्षिण में स्थित बड़े तालाब की ओर तेज कदमों से बढ़ता गया। तालाब के आस–पास पेड़–पौधे और झाड़ियाँ खड़ी हुई थीं। वहीं जाकर एकान्त में बैठ गया। अस्पताल में उसकी खोजबीन होती रही।

काफी देर तक सोचता–विचारता रहा। क्या करूँ...क्या न करूँ? बीमार माँ का चेहरा उसके मन मस्तिष्क में बार–बार उद्वेलित करता रहा... कितना प्यार करती है माँ... अगर कुछ ऐसा वैसा कर लिया तो वह कैसे जिएगी... संगी–साथी क्या कहेंगे...छोटे बहन भाईयों का प्यार दुलार उसे मोह बंधन में बांधता रहा। उसे लगा कि उसके पिता की इसमें कोई गलती नहीं है, गलती तो उसी की है कि उसने पढ़ाई में मन नहीं लगाया और वह बार–बार फेल होता रहा... कितनी मेहनत से उसके पिताजी महीने में थोड़ा सा वेतन पाते हैं...क्या वह सचमुच ही पिता की मेहनत का पैसा बरबाद कर रहा है... हाँ, हाँ ये बिल्कुल सही है... वह अब मेहनत से पढ़कर पिताजी को खुशियाँ देगा... वह अपने पिता से क्षमा माँगेगा...वह अपना संकल्प बार बार दोहराता रहा... उसने तालाब में डूबकर जीवन समाप्त करने का विचार मन से त्याग दिया... वह ईश्वररूपी आत्मा से अच्छा जीवन जीने का संकल्प लेकर अपने घर की ओर बढ़ने लगा। जैसे ही उसने अपने घर में प्रवेश किया तो भय और शंकारूपी बादल छँट गये थे। जब उसने अपने पिता से माफी मांगते हुए अपना दृढ़ संकल्प दोहराया, तब उसके पिता ने उसे अपनी बाँहों में भर लिया था। काफी देर तक दोनों के नेत्रों से अश्रुधारा बहती रही।

उसने बाद में कक्षा आठवीं और दसवीं की परीक्षाऐं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर अपने विद्यालय और पिता का गौरव बढ़ाया। फिर तो उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा। हाई स्कूल परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के उपरान्त वह ट्यूशन करके अपनी पढ़ाई कर अपना व्यय तो निकालता ही रहा, तथा साथ ही अपने परिवार के भरण–पोषण में सहभागी बनकर सबका राज दुलारा बन गया था।

• मुरादाबाद (उ.प्र.)

रसोईघर में बिल्ली

चित्रकथा - देवांशु वत्स

मजा बहुत फिर आया

कविता : रावेन्द्र कुमार 'रवि'

गर्मी के मौसम में मैंने
पंखा एक बनाया
ऐसा पंखा, जिसे देखकर
सूरज कुछ झुँझलाया।
बहुत बड़ी सीढ़ी पर चढ़कर
वहाँ उसे पहुँचाया
वहाँ बहुत से तारों से कस
उसको फिर बँधवाया।
एक सितारे में गड्ढाकर
गड्ढे में फँसवाया।
आसमान में टँगे-टँगे अब
वह पंखा लहराया।
सौर ऊर्जा मिली, चला वह
कभी नहीं रुक पाया।
साँस सभी ने ली सुकून की
मजा बहुत फिर आया।
फर-फर, फर-फर चली हवा से
पूरा शहर नहाया।
गर्मी के मौसम में मैंने
पंखा एक बनाया।

● ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

बीजापुर का कस्साव

बीजापुर के सुल्तान का प्रिय परामर्शदाता और राज दरबारी दस्तरखान पर बैठा तो व्यंजनों की क्षुधावर्धक गन्ध के बावजूद झल्ला पड़ा। अनेक खाद्य पदार्थ परोसे हुए थे किन्तु मांस नहीं था।

''बेगम'' उसने पुकारा।

उसकी तीनों बेगमें दौड़ी हुई दस्तबदस्ता आ खड़ी हुई, सबसे बड़ी मोहम्मदी बेगम, बीच की रजिया और सबसे छोटी नवेली दुल्हन शहजादी बेगम तीनों आंखें झुकाए खड़ी रहीं। फिर रजिया ने पूछा– ''आली जाह, क्यों खफा हो रहे हैं?''

''खाने में गोश्त क्यों नहीं है? क्या मैं भैंस–बकरी हूं जो घास पात खाऊँगा।''

''हाय अल्लाह''– नखरे से शाहजादी ने कहा और चुप हो गई।

''अल्लाह को इससे क्या लेना देना, छोटी?''

'आपको मालूम नहीं है क्या कि गोश्त शहर में कहीं भी नही मिल रहा है' मोहम्मदी ने कहा।

''क्यों?''

''क्यों क्या? आप तो रोज ही दरबार में जाते हैं। सुल्तान ने हुक्म दे दिया है कि कोई भी कस्साव शहर के अन्दर गाय का गोश्त नहीं बेचेगा।''

मीर अमजद अली ने थाल हटा दिया और उठकर खड़ा हो गया। फिर बोला ''बेगम! मैं अभी सुल्तान के पास जाकर सही बात का पता लगाऊँगा।''

बीजापुर का वृद्ध शाह अपने हरम में था। रात काफी बीत चुकी थी। शराब का दौर चल रहा था। सुल्तान अलसाया सा मसनद के सहारे पड़ा था कि खबर आई के मीर अमजद अली आबिदा दीद हासिल करना चाहते हैं।

सुल्तान गुर्रा पड़ा और इतनी रात गए? आबिदी क्या पागल हो गया है।

बहरहाल सुल्तान ने आबिदी को अन्दर बुलवाया और पूछा– ''क्या बात है आबिदी?''

''हुजूर मैं भूखा हूं।''

सुल्तान ठठाकर हंस पड़ा– ''तुम भूखे हो! वाह, खूब। तुम्हारी तोंद बताती है कि तुम भूखे हो। खैर, भूखे ही सही। तो जाओ न खाना खाओ। महल में खाना हो तो बावर्ची बुला लाओ।''

''सरकार! यह बात है कि मेरे खानसामा में आज गोश्त नहीं पकाया है।''

''तुम पागल हो आबिदी, कल को तुम यह शिकायत लेकर मेरे पास आओगे कि तुम्हारी बेगम तुम्हें प्यार नहीं करती। अच्छा तो गोश्त क्यों नहीं पकाया गया है? क्या सारे कस्साव मर गए हैं?''

''कस्साव हैं ही नहीं।''

''आबिदी कस्साव एक पेशा है। वे चले कहाँ जाएगे?''

''आलीजाह वे शहर के बीच में सड़क कलों पर गोश्त बेचते थे।''

शाह फिर अट्टहास कर कहा–''ओह! तुम भूखे हो, गोश्त के भूखे हो, भई, वाह! मगर फिर रोटी क्यों नहीं खा लेते? ओह ! हो!! याद आया, मैंने ही उन्हें शहर के बाहर दुकानें खोलने का हुक्म दिया है ताकि हिन्दुओं को तकलीफ न हो। शाह जी के साहबजादे शिवाजी ने मुझसे शिकायत की थी और उसकी

शिकायत वाजिब थी, इस लिए माकूल हुक्म जारी कर दिया गया। तुम जा सकते हो। हमें नींद आ रही है।''

मीर अमजद के दीवाने खास में अनेक अमीर उमरा और मन्सबदार एकत्र थे। प्रश्न वहीं शहर में गोश्त न मिलने का था। सभी इस बात पर एक राय थे कि सुल्तान ने हिन्दुओं के साथ पक्षपात किया है। लम्बी बहस के बाद तय पाया गया कि शहर के सबसे पुराने कस्साव घराने के कासिम कुरैशी से कहा जाए कि वह कल से शहर के अन्दर ही आकर गाय का गोश्त बेचे। यदि कोई विरोध करता है तो उससे निपट लिया जाएगा।

चुनांचः अगले दिन कुरैशी गोश्त लेकर सड़क कलां पर आ बैठा। दोपहर के पहले शिवाजी अपने घोड़े पर सवार उधर से निकले। कुरैशी को ज्यादातर अमीर उमराओं दरबारियों का समर्थन प्राप्त था सो उसने लपक कर शिवाजी के घोड़े की रास पक ड़ ली

का बिल्कुल ताजा गोश्त लाया हूं आज।''

शिवाजी के नथुने फड़क उठे, आँखें लाल हो गई। १४ वर्षीय किशोर ने आव देखा न ताव, तलवार म्यान से खींचकर एक हाथ मारा और कासिम मियां का सिर भुट्टे की तरह सड़क पर जा गिरा। शिवाजी जैसे आये थे वैसे ही लौट गए।

नाबिदी के नेतृत्व में लोग सुल्तान की खिदमत में शिकायत लेकर हाजिर हुए। सारी दास्तान सुनने के बाद सुल्तान ने कहा– ''शिवाजी ने ठीक ही किया है। कासिम ने मेरी हुकुम–उदुली की थी। राज्य के वफादार शख्स के नाते शिवा उसे माकुल सजा देकर राज्य को इज्जत ही बख्शी है।''

शाहजी ने घटना सुनी तो शिवा पर क्रोध करने लगे। आज्ञाकारी पुत्र की भांति शिवाजी ने कहा– ''पिताजी! मैं यह सब सहन नहीं कर सकता, अतः अगर आप आज्ञा दें तो मैं आप की जागीर में जाकर रहने लगूं।''

और शिवाजी उसके बाद पूना स्थित लाल महल में रहने के लिए जा रहे थे।

(निरंतर अगले अंक में...)

सौर कुटुम्ब

कहानी : डॉ. चक्रधर नलिन

तारे अपने ही प्रकाश से, सदा चमकते रहते हैं।
सूर्य एक अद्‌भुत तारा है,आठों ग्रह घूर्णन करते हैं।
बुध सबसे कम देरी वाला, शुक्र और पृथ्वी फिर दूर,
मंगल और बृहस्पति अच्छे, शनि और अरुण दूर भर पूर।
वरुण और यम बहुत दूर से चक्कर सूर्य लगाते हैं,
ग्रह कक्षा पर रवि-परिक्रमा करके नहीं अघाते हैं।
बुध, अट्ठारह दिन में अपनी परिक्रमा पूरी करता,
यम दो सौ अड़तालिस वर्षों में यह तय दूरी करता।
सदा बृहस्पति बारह वर्षों में कर लेता परिक्रमा,
अपनी पृथ्वी तीन सौ पैंसठ दिन में चलती मनोरमा।
मंगल छः सौ सत्ताक्षी दिन उसमें सदा लगाता हैं,
यूरेनस चौरासी वर्षों में निज कदम बढ़ाता है।
नेपच्यून एक सौ पैंसठ दिन में है चक्कर करता,
शनि दो सौ पन्चानवे वर्षों अपनी शिशु डग भरता।
शुक्र मात्र दो सौ पचीस दिन अब तक है लेता आया,
छोटे बड़े भिन्न रूपों में सौर कुटुम्ब हमें भाया।

● लखनऊ (उ.प्र.)

राजू की इच्छा

कहानी : प्रिया शर्मा

एक लड़का था, नाम था राजू। माता-पिता की एक दुर्घटना में मौत होने के कारण राजू की कभी माता-पिता का प्यार नहीं मिला। राजू जब बहुत छोटा था, तब ही उसके माता-पिता की मौत हो गई। इस कारण उसने अपने माता-पिता को कभी नहीं देखा। इसलिए वह अपनी बूढ़ी दादी के पास रहता हुआ भी कभी माता-पिता को याद नहीं करता। क्योंकि दादी उसे एक माँ की तरह पालती थी।

दादी उसे सुलाने के लिए भूत-प्रेत, जाद और परियों की कहानियाँ सुनाती थी। इस प्रकार की कहानियाँ सुनते-सुनते ही राजू बड़ा हुआ। दादी खुद भूखी रहकर भी राजू को भोजन खिलाती थी। एक रात उसकी दादी ने उसे स्वर्ग की कहानी सुनाई। कहानी सुनने के बाद उसने दादी से स्वर्ग जाने के लिए जिद की। लेकिन दादी ने उसे समझाया कि जीवित व्यक्ति का स्वर्ग जाना संभव नहीं है। लेकिन वह अपनी दादी की इस बात को समझ नहीं सका। जब उसकी दादी ने इस बात से इनकार किया तो वह अपने कमरे में जाकर रोने लगा और रोते-रोते सो गया।

सपने में उसे भगवान इन्द्र दिखाई दिए। तो राज उनसे बोला। मुझे स्वर्ग के दर्शन करने हैं। भगवान इन्द्र बोले- ''मैं तुम्हें एक डिब्बा देता हूँ। जब तुम कोई परोपकार करोगे तो तुम्हारे डिब्बे में एक सोने का सिक्का आ जाएगा। जिस दिन यह डिब्बा पूर्ण रूप से भर जाएगा। उस दिन तुम स्वर्ग आ सकते हो।'' वह अगले दिन विद्यालय जाने हेतु तैयार हुआ। उसकी दादी ने उसे (दो) केले दिए और कहा कि रास्ते में खा लेना। वह विद्यालय जाने के लिए रवाना हुआ।

रास्ते में उसे एक भिखारी दिखाई दिया। उसी रास्ते से उसके अध्यापक आ रहे थे। उसने सोचा कि यदि यह केला मैं इस भिखारी को दे दूं तो अध्यापक महोदय मेरी बहुत तारीफ करेंगे। ऐसा सोचकर राजू ने एक केला उस भिखारी को दे दिया। विद्यालय में प्रवेश करते ही अध्यापक ने राजू की सभी विद्यार्थियों के सामने बहुत प्रशंसा की। राजू मन ही मन बहुत खुश हुआ। उसने सोच अब मैं जल्दी से स्वर्ग जाऊँगा। राजू ने घर पहुँचते ही सबसे पहले वह डिब्बा खोलकर देखा लेकिन डिब्बे में एक भी सिक्का नहीं था। वह उदास हो गया और पुनः रोने लगा और रोते रोते सो गया। भगवान इंद्र उसके सपने में फिर से आए तो राजू ने कहा ''मैंने आज गरीब व्यक्ति की मदद की लेकिन मेरा डिब्बा खाली ही है।'' इंद्र बोले- ''आज तो तुमने किसी की कोई मदद की तुमने वह स्वयं के हित में किया। यदि तुम स्वार्थ रहित होकर कोई परोपकार करोगे तो तुम्हारा डिब्बा जल्द ही भर जाएगा।''

राजू जब सुबह उठा तो वह अपनी दादी माँ के साथ मंदिर गया। वहाँ उसने मंदिर में बैठे लोगों को प्रसाद

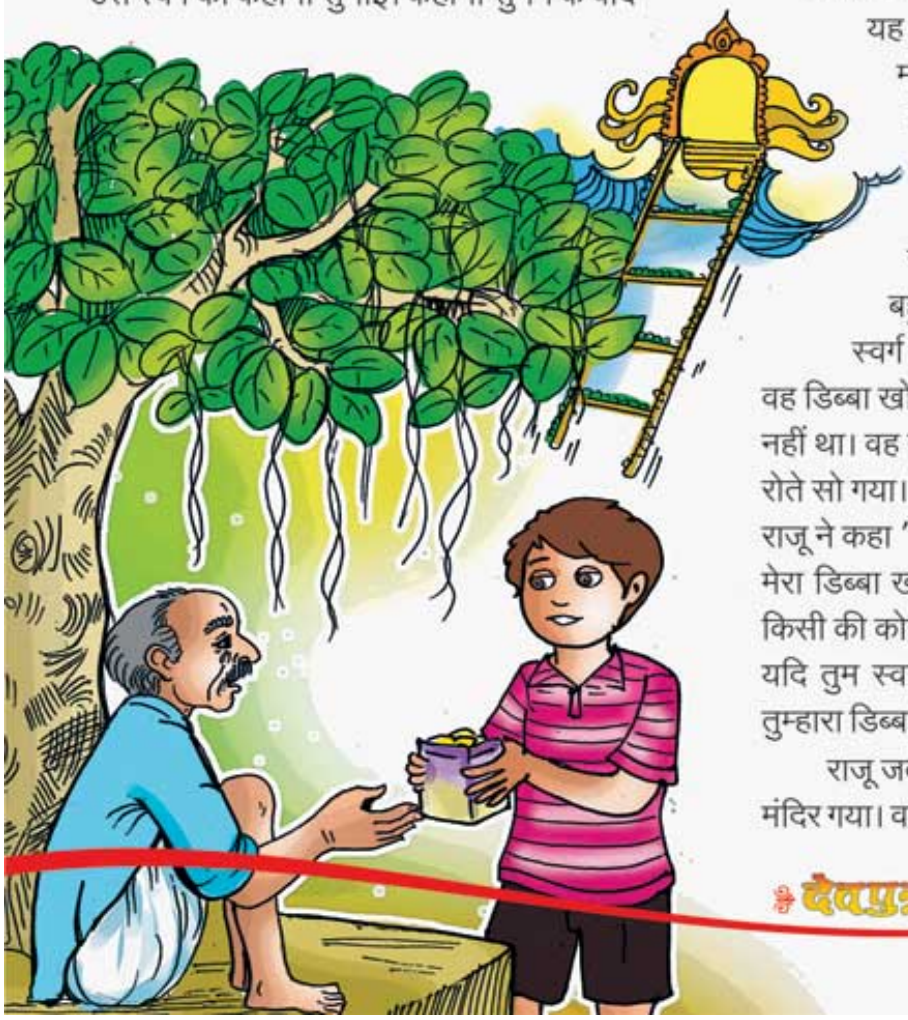

खिलाया और गली में जो आवारा गायें और कुत्ते घूम रहे थे, उन्हें जाकर रोटी खिला दी। रात को उसने जो फटे पुराने कपड़े थे उन्हें सिल कर रजाई बनाने में दादी माँ की बहुत मदद की। वह अब सुबह अपने विद्यालय पहुँच गया। वहाँ तेज बरसात होने लगी। तेज वर्षा के कारण कुछ नन्हें पौधे की जड़ें मिट्टी होने के कारण ऊपर आ चुकी थी। राजू ने भीगते हुए भी पौधों पर बहुत सारी मिट्टी डाली। जब वह घर आया तो उसने देखा कि उसका डिब्बा भर चुका था। आज वह बहुत खुश था। रात को सोने पर भगवान इंद्र ने पुनः राजू को दर्शन दिए। राजू ने कहा कि भगवान मैं अब स्वर्ग जैसी शोभायमान नगरी को अपनी आँखों से देख सकता हूँ। इंद्र देव प्रसन्न हुए और बोले ''हाँ अब तुम मेरे साथ चल सकते हो। कल प्रातः तुम गाँव की नदी के पास जो बरगद का वृक्ष है उसके नीचे आ जाना। हम दोनों वहीं से प्रस्थान करेंगे।'' राजू खुशी-खुशी सवेरे वहाँ पहुँच गया। वहाँ एक बूढ़ा व्यक्ति बैठा हुआ था जो कई समय से रो रहा था। राजू ने उन महाशय से पूछा आप किस कारण रो रहे हैं। उन्होंने कहा- ''मेरी जीवन में एक ही इच्छा हैं कि मैं स्वर्ग जैसे महान लोक के दर्शन करूँ।''

राजू ने पूछा तो मैं इसमें आपकी क्या मदद कर सकता हूँ। वे बोले- ''ये डिब्बा तुम मुझे दे दो, मेरा अंत समय निकट आ चुका है। मैंने अपने जीवन में कोई भी ऐसा कार्य नहीं किया जिससे मुझे स्वर्ग की प्राप्ति हो सके। तुम अभी छोटे हो। तुम चाहों तो एक बार पुनः इस डिब्बे को भर सकते हो।'' राजू पहले तो हिचकिचाया। लेकिन बाद में उसने खुशी-खुशी डिब्बा उन्हें यह सोचकर दे दिया कि मैं यह डिब्बा पुनः भर सकता हूँ। लेकिन यह क्या वे कोई बूढ़े व्यक्ति नहीं अपितु स्वयं भगवान इंद्र थे। राजू बड़ा ही खुश हुआ। भगवान इंद्र उसकी परीक्षा लेने के लिए आए थे।

स्वर्ग से उसके लिए एक सोने की सीढ़ी उतारी गई। और वह स्वर्ग पहुँच गया। राजू पूरे स्वर्ग लोक में घूमा। अब वह बहुत खुश था। वह अपने घर में आ चुका था। उसने संपूर्ण बात अपनी दादी को बता दी। अचानक उसके कानों में स्वर सुनाई दिया अरे कब तक सिक्कों के सपने देखकर बड़बड़ाता रहेगा? उठना नहीं है क्या?'' पर इस सपने का असर यह हुआ कि उस दिन के बाद राजू हमेशा दूसरों की सहायता करने लगा।

इसी कारण ही कहा गया है कि - ''परोपकार ही सफलता की कुंजी हैं।''

● नोखा (राज.)

॥ बाल प्रस्तुति ॥

पहेलियाँ

कविता : मनोज कुमार बिश्नोई

(१)

घेरदार है लहंगा उसका,
एक टांग से रहे खड़ी।
करते है, सब चाह उसी का
वर्षा हो या धूप कड़ी

(२)

मध्य कटे तो कान बनूं
आदि कटे तो नून
करता हूं इंसाफ बने
पड़े बहाना खून

(३)

बिन पैरों के चलते देख,
इत-उत उसको फिरते देखा।
काम अनोखे करते देखा,
पानी से वह मरता देखा।

● इन्दौर (म.प्र.)

खेलें खेल

कविता : डॉ. राजेन्द्र पंजियार

आओ भाई खेलें खेल
जिससे बढ़े आपसी मेल
छोटू तुम बन जाओ बिल्ली
म्याऊं-म्याऊं कर जाओ दिल्ली
मोटू तुम बन जाओ इंजन
छुक-छुक करते जाओ लंदन
सिट्टू तुम बन जाओ राजा
सिंहासन चढ़ खाओ खाजा

बिट्टू तुम बकरी बन जाओ
में-में करके घास चबाओ
पुट्टू कुत्ता बन गुर्राओ
सबको अपना क्रोध दिखाओ
नीतू तुम दूल्हा बन जाओ
दुल्हिन जो हो गले लगाओ
सांझ हुई अब सब रुक जाओ
जन गण गाकर शीश नमाओ।

• भागलपुर (बिहार)

विमान परिचारिका कैसे बनें?

आलेख : प्रो. जमनालाल बायती

जो युवतियां अविवाहित एवं आत्मनिर्भर रह कर, बिना दूसरों की सहायता की अपेक्षा किए, त्वरित गति से निर्णय लेकर साहसी, चमक-दमक या ग्लेमर का जीवन जीने की आकांक्षी रोजगार के क्षेत्र में प्रवेश करना चाहती है, उनके लिए वैमानिक सेवा में विमान परिचारिका या व्योमबाला सर्वाधिक उपयुक्त व्यवसाय हो सकता है। भिन्न-भिन्न स्थानों पर घूमने तथा भिन्न-भिन्न लोगों से मिलने-जुलने तथा मेल-जोल बढ़ाने की इच्छुक नवयुवतियों के लिए इस क्षेत्र में रोजगार के पर्याप्त अवसर हैं, यात्रियों को उपलब्ध पत्र-पत्रिकाएँ वितरित करनी है, डाक-टिकट व अन्य सामग्री उपलब्ध करवानी है, कमजोर हृदय वालों को ढाढ़स बंधानी है, यात्रियों को कमर में बेल्ट बांधने के लिए कहना हैं तथा उन्हें रूई देना हैं, एरोड्रम आने की सूचना तथा आपत्ति के समय सभी आवश्यक उद्घोषणाएं भी यही व्योम बालाएं करती हैं।

प्रवेश के लिए शैक्षिक योग्यताएं

विमान परिचारिका बनने के लिए प्रत्याशी को स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। जो प्रत्याशी अन्तर्राष्ट्रीय उड़ानों की आशा करती हैं उन्हें धारा प्रवाह अंग्रेजी बोलने का तथा आन्तरिक राष्ट्रीय उड़ानों में रुचि सम्पन्न विमान परिचारिकाओं को हिन्दी के काम चलाऊ ज्ञान के अतिरिक्त अंग्रेजी में वार्तालाप क अभ्यास या ज्ञान होना चाहिए। हिन्दी तथा अंग्रेजी के सिवाय अन्य किसी भी एक या अधिक भारतीय भाषाओं का ज्ञान अतिरिक्त योग्यता मानी जाती है। यदि कोई प्रत्याशी इन भाषाओं के अतिरिक्त विदेशी भाषाएं भी जानती है, तो उसकी नियुक्ति की सम्भावनाएं और भी प्रबल हो जाती हैं। इन अनिवार्य योग्यताओं के अतिरिक्त प्रत्याशी को वांछित योग्यताओं पर भी ध्यान देना चाहिए। प्रारम्भिक समाज शास्त्र का ज्ञान, मानवीय सम्बन्ध, पर्यटन तथा आहार प्रबंध में मान्यता प्राप्त संस्थान से डिप्लोमा या डिग्री, प्रत्याशियों द्वारा सम्पन्न किए जाने वाले कार्य की प्रकृति को देखते हुए उन्हें औषधोपचार के क्षेत्र में भी प्रारम्भिक ज्ञान होना वांछनीय है।

आयु एवं शारीरिक योग्यताएं

नियुक्ति के समय इन युवतियों की आयु १९ से ३० वर्ष के मध्य होना चाहिए। वे अविवाहित हो तथा सेवा काल के मध्य भी विवाह नहीं करेंगी। ऐसा भी लिखित में अनुबंध देना होगा। दृष्टि सामान्य होनी चाहिए। कई कार कान्टेक्ट लेंस से देखने वाली

युवतियों पर भी विचार किया जाता है। उनकी लम्बाई १५३ सेंटीमीटर की अपेक्षा की जाती है तथा लम्बाई के इस अनुपात में ही उनका भार भी होना चाहिए।

आवेदन का तरीका

विज्ञापन प्रकाशित होते ही, समय की अवधि में, चाही गई सूचनाओं के क्रम का पालन करते हुए टंकित आवेदन–पत्र प्रस्तुत करना चाहिए। यदि नियोक्ता द्वारा वितरित किया गय आवेदन–पत्र ही भर कर प्रस्तुत करना है तो आवेदन पत्र वहीं से मंगवाना चाहिए। कई बार आवेदन पत्र वितरित करने के लिए भी अंतिम तिथि का संकेत कर देते है, यदि ऐसा किया गया है तो उस तिथि से पूर्व ही आवेदन करना चाहिए। इसके साथ ही अन्य बातों तथा आवेदन–पत्र की कीमत के रूप में यदि मांगा हो, तो पोस्टल आर्डर, पता लिखा, उपयुक्त डाक टिकट लगा लिफाफे का ध्यान रखना होता है। लिफाफे के बायीं और ऊपर की तरफ आवेदन पत्र भिजवाने के लिए प्रार्थना पत्र तो आपको लिखना ही है। यदि आवेदन पत्र आपको ही तैयार करना है, तो सूचनाओं का क्रम वही रखिए जो नियोक्ता द्वारा चाहा गया है। यथा पूरा नाम, पिता का नाम, डाक का पता, जन्मतिथि, धर्म, राष्ट्रीयता, क्या आप अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के सदस्य हैं? शैक्षिक–व्यवसायिक योग्यताएं, अनुभव का ब्यौरा, कद (सेंटीमीटर) में, वजन (किलोग्राम) क्या चश्में के बिना या कान्टेक्ट लेंस के साथ नेत्र दृष्टि सामान्य है, अपनी पसंद के क्रमानुसार तीन नियुक्ति स्थान, अन्य कोई संगत सूचना, जो प्रत्याशी देना उपयुक्त समझे, आवेदन पत्र ब्यौरा समाप्त होने के पूर्व घोषणा पत्र आवेदन पत्र में दी गई सूचनाएं मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार सही हैं, और अन्त में आवेदन पत्र के समाप्त होने पर, बिना जगह छोड़े दायीं ओर अपने हस्ताक्षर कर दीजिए। इसी प्रारुप को फुलस्केप कागज पर टाइप करवा लेना चाहिए। आवेदन पत्र के साथ आपको अपना नवीनतम पासपोर्ट साइज फोटो (तीन प्रतियां) भी संलग्न करना चाहिए। फोटो की पीठ पर दस्तखत भी कर दीजिए तथा उसके नीचे सुपाठ्य अक्षरों में अपना पूरा नाम कोष्ठक में लिख दीजिए। आप आवेदन करने की अन्तिम तिथि की प्रतीक्षा मत कीजिए, ज्योंही आवेदन पत्र तैयार हो जाए, नीचे के पते पर दिए गए पते पर भिजवा दीजिए।

कार्मिक निदेशक,
इण्डियन एयर लाइन्स,
एयर लाइन, हाऊस, ११३,
गुरुद्वारा रकाबगंज रोड़, नई दिल्ली ११०००१

यदि आप पूर्व से नियोजित हैं तो आपका आवेदन पत्र अपने नियोक्ता के माध्यम से जाना चाहिए। फिर आप चाहे किसी प्रकार के संस्थान में काम करते हों, यथा सरकारी, निजी, अर्द्धसरकारी या सरकारी उपक्रम। हाँ, अपने आवेदन पत्र की अग्रिम प्रति विज्ञापन के उत्तर में, आवेदन पत्र के प्रथम पृष्ठ पर दायीं और ऊपर के कोने पर 'अग्रिम जमानत' लिखकर सीधी भिजवा सकती हैं। ऐसी स्थिति में आपको पूर्व नियोक्ता का अनापत्ति प्रमाण पत्र निर्दिष्ट स्थान पर भिजावाना होगा। एक अत्यंत महत्वपूर्ण सावधानी बरतने का ध्यान भी आपको रखना है, वह यह कि चयन मण्डल को या नियोक्ता को किसी प्रकार की सिफारिश आपको या आपके लिए किसी अन्य द्वारा नहीं करनी है। ऐसा करने पर, सिफारिश की पुष्टि हो जाने पर प्रत्याशी की पात्रता ही समाप्त कर दी जाती है।

प्रवेश का तरीका

विमान परिचारिकाओं की नियुक्ति के लिए इण्डियन एयर लाइन्स समय–समय पर रिक्त पदों पर विज्ञापन प्रकाशित करती रहती है। विज्ञापन के उत्तर में प्राप्त तथा आवेदन पत्रों में दी गई सूचनाओं के आधार पर उपयुक्त प्रत्याशियों को समूह चर्चा में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है तथा समूह चर्चा में असाधारण प्रतिभा बताने पर चयनित प्रत्याशियों का साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है। साक्षात्कार के बाद

सफलतापूर्वक समाप्त करने पर स्पष्ट रिक्त स्थानों पर नियमित एवं परिवीक्षा काल के आधार पर नियुक्तियां दे दी जाती हैं।

पारिश्रमिक व सेवा शर्तें

चयनोपरान्त प्रत्याशियों को हैदराबाद में प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण सफलतापूर्वक समाप्त करने के बाद (पुराने वेतनमान के अनुसार) ६००-१३०० रुपए प्रतिमाह के वेतनमान में कुल मिलाकर लगभग दो हजार छः सौ रुपए की परिलब्धि पर नियुक्तियां की जाती है। स्थायी होने पर त्रिसूत्री लाभ भी मिलता है। यथ जनरल प्रोविडेण्ट फण्ड, ग्रेच्युटी एवं पेंशन। यदि इनके वास्तविक पारिश्रमिक पर ध्यान दिया तो वह मौद्रिक पारिश्रमिक से कहीं अधिक होता है। इन्हें भी अन्य राज्य कर्मचारियों के समन ही शत-प्रतिशत चिकित्सा व्यय पुनर्भरण की सुविधा तथा मकान भाड़ा मिलता है। जहाँ लागू हो, वहाँ शहरी क्षतिपूर्ति भत्ता भी मिलता है। अपने निवास से एयर स्टेशन तक जाने के लिए परिवहन सुविधा भी उपलब्ध होती है, नियमानुसार निःशुल्क या रियासती दरों पर देश विदेश की यात्रा करने के लिए अनुज्ञा पत्र भी मिलते हैं। इस प्रकार इनका वास्तविकता वेतन मौलिक वेतन से कहीं अधिक होता है। समय-समय पर इन वेतनमानों में होने वाले परिवर्तन एवं परिमार्जन का तथा मूल्य सूचनांक के आधार पर बढ़ने वाले महंगाई भत्तों का लाभ भी इन्हें स्वतः ही मिलता रहता है।

व्योम बाला / विमान परिचायिका का व्यक्तित्व

स्वाभाविक है कि व्योम बालाएं या विमान परिचारिकाएं वायुयान से यात्रा करने वाले भिन्न-भिन्न यात्रियों के सम्पर्क में आती है, अतः यात्रियों की दृष्टि से उनका व्यक्तित्व प्रसन्नतादायक होना चाहिए, प्रभावी होना चाहिए, उनके अंग सौष्ठव या शरीर रचना प्रभावित करने वाली हो, उनका व्यवहार विनयपूर्ण तथा शालीनतायुक्त होना चाहिए। तत्परता के साथ यात्रियों की सेवा करने की भावना हो। आसमान में उड़ान के समय वे डरने वाली न हों,

रोजगार की सम्भावनाएं

इस क्षेत्र में एकाएक ढेर सारे पद खाली होंगे या इन ढेर सारे पदों पर नियुक्तियाँ होंगी, ऐसी तो कोई सम्भावना नहीं है। स्पष्ट है कि इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर अत्यंत सीमित हैं। कुछ प्राइवेट एयर लाइन्स के आरंभ हो जाने से अवसर बढ़े हैं, पर इन्हें अभी और बढ़ाया जाना चाहिए। सेवानिवृत्त होने पर, अपने निजी कारणों से सेवा निवृत्ति पूर्व त्याग-पत्र देने से तथा परिस्थितियोंवश संवर्ग बदलने पर समय-समय पर पद रिक्त होते ही रहते हैं तथा आवश्यकतानुसार पदों पर भर्ती भी होती ही रहती है।

• भीलवाड़ा (राज.)

॥ बाल प्रस्तुति॥

बताओं तो जाने

• अभिनन्दन जैन

- *ऐसी कौनसी वस्तु है जो पैदा होते ही उड़ने लगती है?*
- *ऐसी कौनसी वस्तु है जिसे पिसते हैं, काटते हैं, व बाँटते हैं लेकिन खाते नहीं हैं?*
- *ऐसी कौनसी जगह है जहाँ पानी है लेकिन जगह नहीं है?*
- *यहाँ नहीं, वहाँ नहीं, लंदन के बाजार में नहीं, छिलो तो छिलका नहीं और चूसो तो गुटली नहीं?*

समय का सदुपयोग

कहानी : सुनील कुमार माथुर

विद्यालय में गर्मियों की छुट्टियां होने के साथ ही प्रधानाचार्य जी ने सभी बच्चों से कहा कि वे छुटिटयों का सही उपयोग करें और विद्यालय खुलने पर सभी से लिखित में निबंध लिखवाया जाएगा कि किसने कैसे समय का उपयोग किया। सभी बच्चों ने अपनी अपनी योजना के अनुसार छुट्टियां बिताने का पहले से ही प्रोग्राम बना रखा था। कोई अपने ननिहाल गया तो कोई घूमने के लिए अपने रिश्तेदारों के यहां गए।

कोई बच्चा अपने ही घर पर रहकर बुजुर्ग दादा दादी की सेवा की तो किसी ने अपने घर के बाग बगीचे में साफ सफाई कर नए पौधे रोपे। इधर चेतन, गोपाल, नरेश, सलीम, दिनेश, नरेन्द्र ने मिलकर एक टीम बनाई और अपने ही शहर के बाग बगीचों में प्रातःकाल जाकर ठंडक में साफ सफाई करते, तालाबों के आसपास बड़े कूड़े के ढेर को नगर पालिका के वाहन में डालकर दूर दराज के स्थान पर फैंक कर आते, अस्पतालों में जाकर पीडित लोगों के नहलाते और उन्हें साफ कपड़े पहनाते, दवाई देते, कुंआ बावड़ियों के आसपास पड़े कूड़े करकट को साफ किया। इसके अलावा रेल्वे स्टेशन और बस स्टेशन पर गर्मी से बेहाल यात्रियों को ठण्डा पानी पिलाने का कार्य किया। वहीं रास्ते में जहां कहीं झाड़ियां देखी उन्हें काटकर साफ किया और वहां पर स्वच्छ भारत और स्वस्थ भारत के नारे लिखी ताख्तियां लगाई और भारत के प्रधानमंत्री के स्वच्छता के संदेश को जन जन तक पहुंचाने का प्रयास किया। इस कार्य के लिए इन बच्चों ने अपने स्कूल के अध्यापक चेतन काका एवं जिला प्रशासन का सहयोग लिया।

स्कूल खुलने का प्रधानाचार्य जी ने सभी से निबंध लिखवाया और उनका अध्ययन किया जब उन्होंने चेतन, गोपाल, संजय, दिनेश, नरेन्द्र के निबंध देखे तो वे सभी एक से थे। प्रधानाचार्य जी ने सभी को बुलाकर एक जैसे निबंध का कारण पूछा तो उन्होंने टीम भावना से किये कार्य को उनके सामने रखा। प्रधानाचार्य उनके कार्य को देखकर काफी प्रसन्न हुए और सभी बच्चों को दूसरे दिन प्रार्थना सभा में सभी बच्चों के सामने सम्मानित किया और उनके नेक कार्य की भूरि भूरि प्रशंसा की एवं १५ अगस्त को पूरी टीम को संयुक्त रूप से सम्मानित करने की जिलाधीश महोदय से अभिलाषा की और जिला प्रशासन ने भी बच्चों का कार्य देखकर उनका हौसला बढाने के लिए उनके अभिभावकों को भी सम्मानित किया चूंकि इन बच्चों ने गर्मी की छुट्टियों का सही उपयोग किया।

● मेड़तासिटी
(राज.)

रक्षक

कहानी : डॉ. राजीव गुप्ता

मयंक विद्यालय से घर लौटते समय जब सड़क के किनारे खड़ी झाड़ियों से गुजरा तो उसे कूं–कूं की आवाज सुनाई दी।

उसने झाड़ियों के पीछे झांक कर देखा तो वहां एक काला सफेद पिल्ला बैठा रो रहा था। उसके पैर से खून बह रहा था। शायद किसी शरारती लड़के ने उसके पैर में पत्थर मारा था।

मन ही मन उन शैतान लड़कों पर झुंझलाता हुआ मयंक पिल्ले के पास पहुंचा तो वह डर कर और भी जोर से चिल्लाने लगा। शायद उसे लगा कि वह भी उसे मारने आया है।

परन्तु मयंक ने पहले तो उसे प्यार से पुचकारा फिर उसके चुप हो जाने पर वह वहीं बैठे कर उसकी पीठ पर हौले–हौले हाथ फेरने लगा।

जानवर अपने मित्र और दुश्मन को बहुत जल्दी पहचान लेते हैं। पांच ही मिनट में पिल्ला मयंक से बहुत ही हिलमिल गया और अपनी पूंछ हिला–हिला कर अपनी दोस्ती प्रकट करने लगा। तब मयंक की हालत भी बड़ी अजीब सी हो चुकी थी। पिल्ले की टांग से निकला खून उसकी सफेद कमीज पर जगह–जगह लग गया था। यह देख कर उसकी माँ उसे डांटने लगी।

तब मयंक ने कहा– ''माँ, आप ही ने तो उस दिन समझाया था कि हमें जानवरों से प्रेम करना चाहिए। कुछ शैतान लड़कों ने इसे पत्थर मार कर चोट पहुंचाई है। क्या मैं इसे वहीं सड़क पर पड़ा रहने देता। इसे बहुत चोट आई है। यह ठीक से चल भी नहीं पा रहा है माँ! क्या यह हमारा कर्तव्य नहीं कि हम इसकी मरहम पट्टी करें?''

छोटे से मयंक की ये बातें सुन कर उसकी माँ को अपनी गलती का अहसास हुआ। वे अलमारी से

निकाल कर प्राथमिक उपचार का डिब्बा ले आईं।

दोनों ने मिल कर डिटॉल से उसका घाव साफ किया फिर दवा लगा कर पैर में पट्टी बांध दी। जब तक मयंक नहा–धोकर निपटा उसकी माँ ने पिल्ले को एक कटोरी में दूध–रोटी खाने को दे दी। बहुत जल्दी पिल्ला मयंक से हिलमिल गया। वह उसे मोती कह कर पुकारता था।

कुछ ही दिनों में मोती की टांग का जख्म पूरी तरह से भर गया। वह चलने–फिरने और दौड़ने भी गला। पर वह भी कुछ–कुछ लंगड़ाता था। शायद चोट लगने से उसके पैर में कुछ कमी आ गई थी। लेकिन इसके लिए मयंक क्या कर सकता था। उसके बस में जो कुछ था उसने किया था।

एक दिन सड़क पर टहलती एक कुतिया को देख कर मोती जोर –जोर से भौंकने लगा। कुतिया भी तुरंत उसके पास आई। फिर मोती उसके साथ ही चला गया। मयंक समझ गया कि वह इसकी माँ थी। वह शायद कई दिनों से इसे ढूंढ रही थी। उसने संतोष की सांस ली।

इस घटना के कई महीने बीत गए। एक दिन मयंक अपने पिताजी के साथ रात के एक बजे स्टेशन से घर लौट रहा था। वे लोग अभी–अभी कानपुर से आने वाली ट्रेन से उतरे थे। वे लोग अपने घर की तरफ जाने वाली सुनसान सड़क को पार करने लगे कि अचानक सड़क के किनारे खड़ी झाड़ियों के पीछे से नकाब लगाए हुए तीन गुंडे निकले। उनके हाथों में बड़े–बड़े चाकू थे।

''खबरदार, जो जरा सा भी शोर मचाया। जो कुछ भी तुम्हारे पास है मेरे हवाले कर दो।'' उनमें से एक व्यक्ति चाकू लहराते हुए जोर से बोला।

मयंक और उसके पिताजी डर कर कांपने लगे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। अपना सारा सामान इन गुंडों को सौंप देने के अलावा उन्हें कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। उस समय मयंक की पिताजी की जेब से बीस हजार रुपए थे।

'जल्दी करो अथवा पिटने के लिए तैयार हो जाओ।' उन्हें असमंजस में पड़ा देख कर दूसरे गुंडे ने उन्हें धमकाया।

अन्य कोई रास्ता न देख कर मयंक के पिताजी ने सबसे पहले अपनी घड़ी उतार कर उनके हवाले की। अभी वे अपनी जेब से रुपए निकालने ही वाले थे कि दो मोटे–ताजे कुत्ते अचानक उन गुंडों पर टूट पड़े। कुत्तों ने गुंडों को बुरी तरह से काटा तो वे घबरा गए। इसी बीच मयंक के पिताजी ने भी एक गुंडे को काबू में करके अपनी घड़ी वापिस ले ली।

गुंडे किसी तरह स्वयं को बचा कर उल्टे पैरों भाग खड़े हुए।

मयंक और उसके पिताजी इस घटना से आश्चर्य चकित थे। वे जल्दी–जल्दी अपने घर की तरफ चल दिए। वह कुत्ता भी उनका रक्षक बना उनके पीछे–पीछे आ रहा था।

घर पहुंचने तक मयंक ने उसे पहचान लिया। वह वही पिल्ला था जिसको कभी वह झाड़ियों के पीछे से घायल अवस्था में उठा कर लाया था और उसकी मरहम–पट्टी भी की थी। अब वह काफी बड़ा और तंदुरुस्त हो गया था, पर अभी भी एक पैर से कुछ लंगड़ा कर चलता था। दूसरा कुत्ता शायद उसकी माँ रही होगी।

घर पहुंच कर जब मयंक ने सारी बात अपनी माँ को बताई तो वे भी आश्चर्यचकित रह गईं। मोती अब भी द्वार पर खड़ा पूंछ हिला रहा था। मयंक की मां ने उसे पुचकारा तो वह घर के अंदर आ गया। और फिर सबसे ऐसे लिपटने लगा जैसे कोई अपना बहुत दिनों बाद मिला हो।

।। आलेख ।।

विश्व प्रसिद्ध है तमिलनाडु के मंदिरों की कलात्मकता

आलेख : डॉ. अनामिका प्रकाश श्रीवास्तव

प्राचीन काल में हमारे देश में स्थापत्य कला की तीन प्रमुख शैलियाँ विद्यमान थीं– उत्तर भारत की नागर शैली, उत्तर–दक्षिण की बेसर शैली तथा दक्षिण भारत की द्रविड़ शैली।

इनमें मूर्तिकला, शिल्प, सुंदरता आदि की दृष्टि से द्रविड़ शैली अत्यंत मनमोहक, कलात्मक एक प्रेरक है। इसका अधिकाधिक विकास तमिल प्रदेश के अनेक मंदिरों के निर्माण में छठीं शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी के बीच पल्लव, पांड्य, विजय नगर और नायक राजाओं के शासनकाल में हुआ।

तमिलनाडु के सुप्रसिद्ध मंदिरों में मदुरै का मीनाक्षी, रामेश्वरम् मंदिर, तंजौर का बृहदीश्वर, तिरुच्चिरापल्ली का श्रीरंगम् चिदम्बरम् का नटराज तथा कांचीपुरम् का एकांवरनाथ मंदिर आदि उल्लेखनीय हैं। ये पावन स्थान न केवल भारत में बल्कि अपने अप्रतिम शिल्प वैभव के कारण सारे संसार में विख्यात हो चुके हैं। इन मंदिरों में देवताओं की मूर्तियां आज भी रत्नों से सुशोभित हैं और परम्परा को जीवित रखे हुए हैं।

मीनाक्षी मंदिर

दक्षिण भारत में मदुरै का वही महत्व है जो उत्तर भारत में मथुरा का है। यहां का मीनाक्षी मंदिर अपनी भव्यता के लिए जगतप्रसिद्ध है। मदुरै किसी समय पांड्य राजाओं की राजधानी रही है और मीनाक्षी मंदिर

बस्ती के मध्य में बना हुआ है। इसके एक भाग में मीनाक्षी देवी का मंदिर है और दूसरे भाग में सुन्दरेश्वरम् (शिवजी) का। सत्रहवीं शताब्दी में इस मंदिर के विस्तार में नायकवंशी राजा तिरुमलै ने बड़ा योगदान दिया था।

मीनाक्षी मंदिर का सबसे मुख्य आकर्षण इसके ऊँचे-ऊँचे गोपुरों में है जो आकाश को छूते से प्रतीत होते हैं। ये गिनती में चार हैं, जिनका कण-कण उन्नत तथा आकर्षक शिल्प से ओत-प्रोत हैं। इन पर निर्मित सैकड़ों रंगीन देवमूर्तियों के अद्‌भुत कला कौशल को देखकर दर्शक कुछ पल तक मंत्रमुग्ध सा खड़ा इनकी ओर निहारता रहता है। यहा पर एक से एक भव्य मूर्ति शोभायान है। द्रविड़ शैली की सर्वोत्तम मूर्तिकला को यदि देखना है तो मदुरै में जाकर मीनाक्षी मंदिर के इन गोपुरों को देखिए जिनके कारण ऐस सुंदर मंदिर सारे देश में और कहीं नहीं।

मीनाक्षी मंदिर का भीतरी भाग कम कलात्मक नहीं। भित्तियों पर की गई नक्काशी व पच्चीकारी तथा स्थल-स्थल पर बनीं मूर्तियां अपनी अपनी कथा कह रही हैं। यहां पर एक छोटा सा तालाब भी बना हुआ है। मदुरै का विष्णु मंदिर भी इसी शैली पर बनाया गया है, जिसमें विष्णु संबंधी अनेक रंगीन मूर्तियां दर्शनीय हैं। इसके साथ ही, यहां का तिरुमलै पैलेस भी देखने योग्य है जिसके स्वार्गविलास एवं रंगाविलास मुगलकालीन के दीवान-ए-खास व दीवान-ए-आमकी याद दिलाते हैं।

रामेश्वरम् मंदिर

मीनाक्षी मंदिर के बाद तमिलनाडु का सबसे बड़ा आकर्षक रामेश्वरम् का रामेश्वर मंदिर है जो टापू में बना हुआ है। रामेश्वरम् की गणना हमारे देश के चारों धामों में की जाती है। यहाँ पहुँचने के लिए मण्डपम् से पामवन के बीच बने करीब ढाई कि.मी. लंबे एकमात्र रेल पुल से होकर आना पड़ता है। यहाँ से गुजरते समय लहराते सागर का एक ऐसा विस्मयकारी दृश्य देखने

को मिलता है, जो अन्यत्र दुर्लभ है।

रामेश्वर मंदिर अपने आप में एक विशाल दुर्ग सा है, जिसके चारों ओर बने ऊँचे-ऊँचे गोपुर यात्रियों को सहज ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं। इस मंदिर में एक हजार खम्भों वाला एक विशाल प्रांगण है, जिस पर की गई नक्काशी और पच्चीकारी बेजोड़ है। कहते हैं कि यहां पर श्री राम ने लंकाधीश रावण पर विजय प्राप्त करने के लिए शिव जी की शक्तिपूजा की थी। इस मंदिर में स्नान आदि के लिए बाइस कुएं बने हुए हैं जिनका जल समुद्र के निकट होने पर भी मीठा है। पर्यटकों की सुविधा के लिए मंदिर के पूर्वी गोपुर के सामने समुद्र तट के निकट ही एक उत्तम सा जलपान गृह बनाया गया है। यह जगह मदुरै से १५० कि.मी. और श्रीलंका से ७५ कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

श्री रंगम् मंदिर

तंजौर के बृहदीश्वर मंदिर की भांति तिरुच्चिरा-पल्ली का श्रीरंगम् मंदिर भी हमारे देश का विशाल

वैष्णव मंदिर है। यहां मंदिर तिरुच्चिरापल्ली नगरी के निकट कावेरी नदी की दो धाराओं के मध्य एक छोटे से टापू में स्थित है जिसके कारण इस कस्बे का नाम 'श्री रंगम्' पड़ गया है। इस मंदिर में भगवान श्री रंगनाथ जी विराजमान हैं। इस संबंध में यहां एक दंतकथा बड़ी मशहूर है कि लंका पर विजयोपरांत अयोध्या लौटते समय श्री रामचंद्र जी ने यह मूर्ति विभीषण के कहने पर उसे पूजा के लिए दे दी थी, किन्तु गणेश जी की युक्ति से इस मूर्ति को श्री रंगम् में छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा। इस मंदिर के निकट ही जुंबकेश्वर महादेश का शिव मंदिर है, जिसकी अनूठी कला और पच्चीकारी दर्शकों के मन को मोह लेती है। इसके अतिरिक्त तिरुच्चिरापल्ली नगर में बना मातृ भूतेश्वर मंदिर भी यहां का एक देखने लायक मंदिर है, जिसका निर्माण नायकवंशी रानी मंगम्मा ने करवाया था।

बृहदीश्वर मंदिर

मदुरै की तरह तंजौर भी तमिलनाडु का एक प्रमुख नगर है जो रामेश्वर से चेन्नई जाने वाले मार्ग पर स्थित है। यहाँ का साठ मीटर ऊँचा बृहदीश्वर नामक मंदिर भारत का सबसे बड़ा शिव मंदिर माना जाता है। इसमें चोलवंशी नरेश राजराजा चोल ने ग्यारहवीं शती के आरम्भ में बनवाया था। इसके मुख्य आकर्षणों में नंदी की विशाल मूर्ति तथा गर्भगृह में प्रतिष्ठित चमकीले काले पत्थर का लगभग चार मीटर ऊँची शिवलिंग, दोनों ही बड़े प्रभावशाली लगते हैं। यहां का सरस्वती महल का नामक पुस्तकालय बहुत मशहूर है। जिसमें असंख्य अनुपलब्ध पांडुलिपियों का भंडार है। इस क्षेत्र के अन्य दर्शनीय कलात्मक मंदिरों में मुन्नारगुड़ी का राजगोपाल स्वामी मंदिर और तिरुवारूर का त्यागराज स्वामी मंदिर भी उल्लेखनीय हैं।

नटराज मंदिर

तमिलनाडु के प्राचीन मंदिरों में चिदम्बरम् के नटराज मंदिर का अपना अलग महत्व है। इस मंदिर की विशेषता यह है कि इसमें शिवलिंग के स्थान पर

नटराज की मूर्ति विराजमान है। यहां की नृत्य मुद्रा में कांसे की शिव मूति अन्यत्र दुर्लभ है। इसका निर्माण छठी शताब्दी में पल्लव नरेश सिंह वर्मन ने करवाया था जिसके उपरांत चोल पांड्य तथा विजयनगर के राजाओं ने इसके विकास में योगदान दिया। यह सारा मंदिर बत्तीस एकड़ भूमि के क्षेत्र में फैला हुआ है। पांच तत्वों के आधार पर पांच लिंगों की कल्पना की गई है जिसमें गमन लिंग चिदम्बरम् इस मंदिर में स्थापित है। यहां की नृत्यशाला और कनक सभा मंडप शिल्प के सुंदर नमूने हैं। गोपुरों पर भरतनाट्यम की एक सौ आठ मुद्राओं में निर्मित नटराज की मूर्तियां दर्शनीय हैं। इस मंदिर में एक बड़ा–सा तालाब भी बना हुआ है।

इस संबंध में यहां पर एक कथा बड़ी प्रचलित है। कहाँ जाता है कि पहले पहल यहां पर एक घना जंगल था। इस जंगल में कई ऋषि–मुनि तप करते थे, उन्हें तप पर घमण्ड हो गया था। उनके घमण्ड को चूर करने के लिए एक बार शिव कैलाश से यहां आए। शिव का मुकाबला करने के लिए ऋषि–मुनियों ने मिलकर एक चीता, एक सर्प और बौने दैत्य अपने शरीर पर लपेट लिया और बौने दैत्य को अपने पांवों के नीचे कुचलकर ताण्डव नृत्य किया। उस समय की शिव की वह मुद्रा आज सारे संसार में नटराज के रूप में जानी जाती है। इसलिए चिदम्बरम् को भरतनाट्यम की जन्मभूमि भी कहा जाता है। धार्मिक महत्व के साथ–साथ नृत्यकला

एकांबरनाथ मंदिर

प्राचीन काल में जिन सात पुरियों को मोक्षदायिनी माना गया है, उनमें कांची अर्थात् कांचीपुरम् एक है। इस नगरी का नाम किसी समय कांचपुर (कनकपुरी) भी था तो कालान्तर में कांचीपुरम् हो गया। यहां का एकांबरनाथ मंदिर तमिलनाडु का एक विख्यात मंदिर है जिसका निर्माण सोलहवीं शताब्दी में विजय नगर के राजा कृष्णदेव राय ने करवाया था। इसका गोपुर दस मंजिला है जिसकी ऊँचाई सत्तावन मीटर है। यहां का शिल्प द्रविड़ शैली का एक बेहतरीन नमूना है। इस मंदिर में पृथ्वीलिंग स्थापित है, कांचीपुरम् के अन्य दर्शनीय मंदिरों में कैलाशनाथ, बैकुण्ठनाथ,पेरुमल, विश्वेश्वर, वरदराज स्वामी, चंद्रप्रभा आदि उल्लेखनीय है। वरदराज मंदिर में चट्टान को काट कर जंजीर का जो रूप दिया है, देखते ही बनता है। यह नगरी चेन्नई से ७१ कि.मी. की दूरी पर स्थित है और कई शताब्दियों तक पल्लवकालीन राजधानी के रूप में उल्लेखनीय हैं। वरदराज मंदिर में चट्टान को काट कर जंजीर का जो रूप दिया गया है, देखते ही बनता है। यह नगरी चेन्नई से ७१ कि.मी. की दूरी पर स्थित है और कई शताब्दियों तक पल्लवकालीन राजधानी के रूप में गौरवशाली रही है। हमारे देश के पांचवे शंकराचार्य भी यहीं रहते हैं जो कांची कामा कोटी शंकराचार्य के नाम से जाने जाते हैं।

● झाँसी (उ.प्र.)

हमारे राज्य पुष्प

पंडिचेरी का राज्य पुष्प

नागलिंगा

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

सुन्दर फूलों वाला पौधा,
भारत में मिल जाता।
वेनेज्वेला पेरु तक से,
इसका गहरा नाता।।
वृक्ष बीस मीटर तक ऊँचा,
होता पतझड़ वाला।
भारी, बड़े फलों के कारण,
लगता बड़ा निराला।
मौसम में यह गुच्छे वाले,
फूलों से भर जाता।
नाग समान रूप के कारण,
नाग पुष्प कहलाता।।
रंग बिरंगी इसकी काया,
इसका रूप सजाती।
मोहक मधुर सुगन्ध अनोखी,
सबके मन को भाती।।
फूल बड़ा उपयोगी है यह,
औषधि खूब बनाता।
छोटे-बड़े कई रोगों को,
पल में दूर भगाता।।

● भोपाल (म.प्र.)

दांत का दर्द

चित्रकथा - देवांशु वत्स

सेवाव्रतियों का सम्मान

लखनऊ। 'उस जाति समाज को कोई नहीं हरा सकता। जहाँ पर वृद्धों माता बहिनों, ज्ञानियों का सम्मान होता है और अभावग्रस्त लोगों के लिए योजना बनाकर कार्य किया जाता हो।' महात्मा बुद्ध के इन विचारों को २२ वें भाऊराव देवरस स्मृति सेवा सम्मान में श्री एम. ए. बाला सुब्रह्मण्य और पुईथियम वीर लालथ्नकन्गलियाना को सम्मानित करते हुए मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्णगोपाल जी ने भाऊराव जी के दिखाए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। सम्मानमूर्तियों को अंगवस्त्रम् व प्रशस्ति पत्र सहित ५१-५१ हजार रुपए की सम्मान निधि भेंट की गई।

कार्यक्रम के अध्यक्ष राज्यपाल श्रीराम नाईक एवं मुख्य अतिथि राज्यपाल श्री कप्तान सिंह जी सोलंकी रहे। इस अवसर पर भाऊराव देवरस सेवा न्यास के श्री ब्रह्मदेव जी शर्मा (भाई जी) श्री अवधेश प्रसाद सिंह जी सहित अनेक न्यासीगण

सुडोकू १ का हल

४	७	९	९	६	१	५	२	८
२	१	३	४	८	५	७	९	६
६	८	५	२	७	९	४	३	१
३	५	७	१	२	६	८	४	९
९	४	२	८	५	७	१	६	३
१	६	८	९	४	३	२	५	७
५	९	४	६	१	८	३	७	२
७	३	१	५	९	२	६	८	४
८	२	६	७	३	४	९	१	५

कथाकथन प्रशिक्षण

देपालपुर। बाल साहित्य सृजनपीठ इन्दौर के तत्वावधान में १८ मार्च २०१७ को स्थानीय विवेक विद्यापीठ के सभागार में विभिन्न विद्यालयों के ४९ बच्चों ने प्रसिद्ध साहित्यकार एवं अ.भा. साहित्य परिषद् के प्रान्ताध्यक्ष श्री जीवनप्रकाशजी आर्य (उज्जैन) के मार्गदर्शन में श्रीमती रश्मि बजाज एवं श्री गोपाल माहेश्वरी (इन्दौर) के सहयोग से आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में बाल कथाकथन का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

संयोजक श्रीमती कुसुम सिसोदिया रही एवं अध्यक्षता डॉ. अशोक अठाना ने की।

छोटे से बड़ा

२, ४, १०, ९, १,
७, ८, ३, ६, ५

पहेलिया

छतरी, कानून, जूता

बताओ तो जानें

धुँआ, ताश,
आँखों में आंसू, ओला

।। संस्मरण ।।

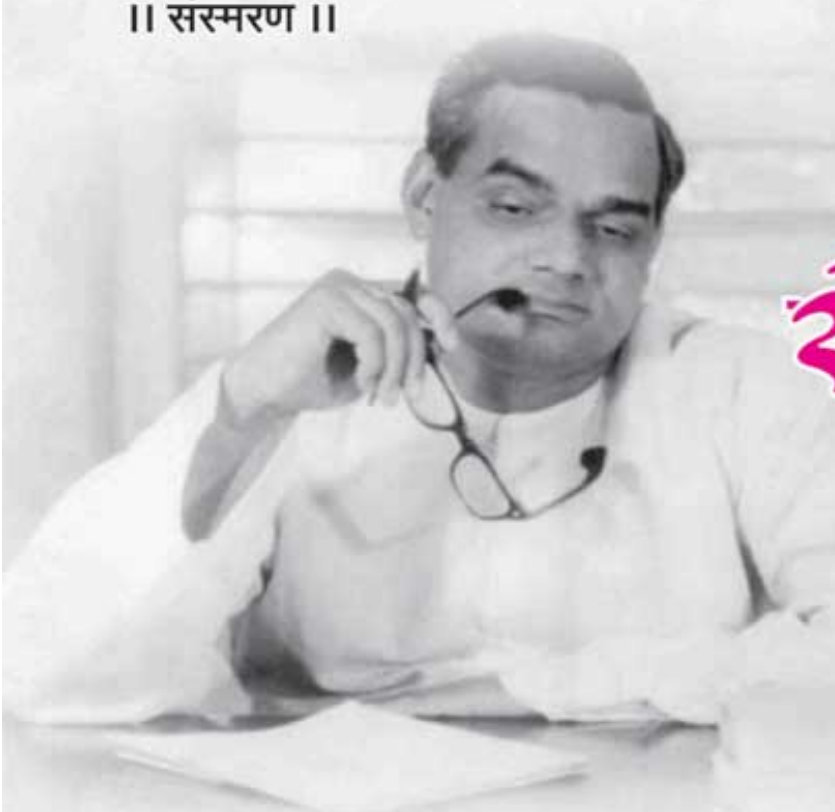

मीठी यादें

वह रोमांचक क्षण

शैवाल सत्यार्थी

घटना १९४५ की है। स्थान– विक्टोरिया कॉलेज का सभा भवन। अटल जी छात्र संघ के सचिव। बी.ए. का अंतिम वर्ष। कॉलेज में कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन। कार्यक्रम रात्रि १० बजे प्रारम्भ होना है... किन्तु हिन्दी के प्रोफेसर, अटल जी के गुरु एवं प्रख्यात कवि अन्य आमंत्रित कवियों के साथ–पीने खाने में मगन हो गए... ११ भी बज गए, उनका कहीं अता–पता नहीं। युवा अटल अपना धैर्य खो बैठे। माइक हाथ में लिया, और दहाड़ उठे– 'मुझे खेद है कि कवि सम्मेलन समाप्त करना पड़ रहा है। हम विद्यार्थी ऐसे कवियों की कविताएं सुनना नहीं चाहते, जिनके लिए समय का कोई महत्व नहीं– जिनका अपने खाने–पीने पर कोई नियंत्रण नहीं। और दूसरे ही क्षण, हॉल खाली हो गया। ऐसा जादुई, प्रभाव था उनका, युवावस्था से ही और कठोर अनुशासनप्रियता भी।

'पूत के पांव पालने' वाली उक्ति के अनुसार, अटल जी किशोरवस्था में ही सद्गुणों की खान थे। एक ऐसा ही संस्मरण संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री नारायणराव तर्टे जी का भी है, जिन्हें अटल जी ने अपना गुरु स्वीकार किया है, और कहा भी है– आज मैं जो कुछ भी हूं, वह श्री तर्टे जी के कारण हूँ।'

साइकिल पर अटल जी

श्री परशुराम गोस्वामी बताते हैं– सन् १९५२ में प्रथम लोकसभा का चुनाव हुआ। कुछ माह पूर्व ही, जनसंघ की स्थापना हुई थी। झाँसी लोकसभा सीट के लिए पार्टी ने अपना प्रत्याशी तथा कार्यकर्त्ताओं ने, अटल जी की सभा कराने का निश्चय किया। उनकी स्वीकृति मिलने पर, निश्चित ट्रेन पर, श्री बापूराव सरदेसाई सहित नेकर, कमीज में, हम दो–तीन कार्यकर्त्ता स्टेशन पहुँचे। अटल जी भी नेकर कमीज में, एक छोटा थैला लिए, उतरे। स्टेशन से बाहर आकर सरदेसाई जी ने कहा–''तांगा कर लिया जाए।'' अटल जी ने पूछा ''आप लोग कैसे आए हैं?'' उन्हें बताया गया कि हम सब सायकल से आए हैं। अटल जी जोर हँसे ''फिर तांगा क्यों, साइकिल से ही चलते हैं' और वे सरदेसाई जी की

साईकिल पर आगे बैठ गए... जिन सज्जन के यहाँ अटल जी का भोजन था, वे उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे। हमारे साथ कोई तांगा न देखा, निराश स्वर में पूछ बैठे ''क्या नहीं आए अटल जी?'' ''मेरे साथ यह हैं वे।'' किन्तु उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था, सरदेसाई जी की बात का।

अम्मा के मंगोड़ों का शौकिन : एक महानायक

ग्वालियर क एक मोहल्ला – दौलतगंज। उसमें एक फुटपाथ, उसके किनारे–मंगोड़े बनाती एक बूढ़ी अम्मा। गरमा गरम मंगोड़े अपनी खुशबू से, राह चलते लोगों को अपनी ओर खींच रहे हैं। तभी एक महाशय आते हैं। बड़ा तामझाम उनके साथ है... अम्मा उनकी ओर देखती है।

''तू बहुत बूढी हो गई, अम्मा।'' उन्होंने कहा।

''हाँ बेटे! तू भी तो कितना बड़ा हो गया है। इतने लोग साथ हैं। कितने समय बाद आया है? पहले अकेला, और जल्दी–जल्दी आता था...इसी फुटपाथ की सरदी–गरमी–बरसात ने, जल्दी बूढ़ा कर दिया है।'' अम्मा बोली। कलेक्टर साथ थे,आदेश हुआ ''अम्मा के लिए एक दुकान की व्यवस्था होनी चाहिए।' ऐसी थी अटल जी की सहृदयता।

और बहादुर के लड्डू : अटल जी के परम प्रिय लड्डू

नया बाजार। उसमें एक काला कलूटा बरामदा उसमें बनते बहादुरा हलवाई के– जादुई सुनहरे लड्डू... मानो, बिना शृंगार (मेकअप) कोई अपूर्व सुन्दरी हो...अटल जी प्रारम्भ से ही मिठाई के दीवाने और फिर लड्डू बहादुरा के। प्रधानमंत्री होने के पश्चात् भी, स्वाद में राई रत्ती कमी न आई। ग्वालियर से कोई दिल्ली पहुँचता, तो मन मोहिनी मुसकान के साथ– ऊँगलियाँ एक गोल नक्शा बनातीं– ''कहां हैं? लाए हो?'' और उनके कहकहों से, सात रेस कोर्स की दीवारें हिल जाती।

इसी मिठास ने उन्हें इतना सर्वप्रिय और अन्यतम मधुर राजनेता बनाया कि उनकी तुलना किसी भी और से नहीं– केवल, और केवल, स्वयं से ही हो सकती है।

● ग्वालियर (म.प्र.)

गर्मी आई

बालगीत:आ.शिवप्रसाद सिंह राजभर'राजगुरु'

चन्दा मामा आ जाओ।
सूरज को समझा जाओ।।
रुष्ट हो गए तपे खूब।
सूखे पोखर सूखी दूब।।
गरमी में है हाल बेहाल।
कुछ तो सबका रखे ख्याल।।
सूरज से करिये अनुरोध।
ठीक नहीं है इतना क्रोध।।
कुछ दिन का लेकर अवकाश।
हो आए नानी के पास।।

● सिहोरा (म.प्र.)

पुस्तक परिचय

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार **डॉ. राकेश चक्र** द्वारा सृजित बाल साहित्य की अनुपम कृतियाँ
हरेकृष्ण प्रकाशन - ९०-बी, शिवपुरी मुरादाबाद २४४००१ द्वारा प्रकाशित ५ महत्वपूर्ण पुस्तकें

बन्दर बिल्ली और कौआ

२५ बालगीतों का ज्ञा-विज्ञान, प्रेरणा और मनोरंजन भरा गुलदस्ता

रिमोट का खेल

२५ मनोरंजक, मनभावन बाल गीतों का रोचक संग्रह

कम्प्यूटर ने खेल दिखाया

२५ बाल गीत जिनमें महापुरुषों, प्रकृति, पर्यावरण एवं ज्ञान विज्ञान के साथ है भरपूर मनोंरजन भी।

धीरे धीरे गाना बादल

३९ बाल गीत जिनमें प्रकृति की छटा है, प्रेरणा का संगीत है और है मनोरंजन की खुशबू।

बाल गुलदस्ता

१०० से अधिक विविधापूर्ण मनोरंजन, प्रेरणा और बालमन की उमंगो ं से भरे मनमोहक बालगीत

बाल गुलदस्ता

आरती प्रकाशन इंदिर नगर, लाल कुंआ, नैनीताल (उत्तराखण्ड) द्वारा प्रकाशित **डॉ. राकेश चक्र** की ६२ बाल कहानियों का महत्वपूर्ण संकलन जिसका संपादन किया है मशहूर बाल साहित्यकार डॉ. मोहम्मद साजिद खान ने।

आरती प्रकाशन इंदिर नगर, लाल कुंआ, नैनीताल (उत्तराखण्ड) द्वारा प्रकाशित **डॉ. राकेश चक्र** की ६२ बाल कहानियों का महत्वपूर्ण संकलन जिसका संपादन किया है मशहूर बाल साहित्यकार डॉ. मोहम्मद साजिद खान ने।

मूल्य २५०/-

धार अपनी खुद बनाना के शौर्य की देहरी लांघ तरुण होती नई पीढ़ी में सकारात्मक ऊर्जा का संचरण करते ५४ नवगीत। प्रकाशक **साधना पब्लिकेशनंस** के-४/४, महाल टाऊन, दिल्ली ११०००९

मच्छर मामा

बाल गीत : रामानुज त्रिपाठी

खूब चुटकियां
काट-काट कर
हँसे रातभर
मच्छर मामा।
फटी हुई थी
मच्छर दानी,
घुस कर शुरु
किए शैतानी
फिर तो मेरे
आस पास ही
बसे रात भर
मच्छर मामा।
कानों के समीप
आ-आकर,
मीठी सरगम
बजा-बजाकर
कभी हाथ में
कभी पैर में
डँसे रात भर
मच्छर मामा।
झट उपाय
मैंने अपनाया
उठकर सीलिंग
फैन चलाया
किसी तरह से,
तब चक्कर में
फँसे रात भर
मच्छर मामा।

● गरयें (उ.प्र.)

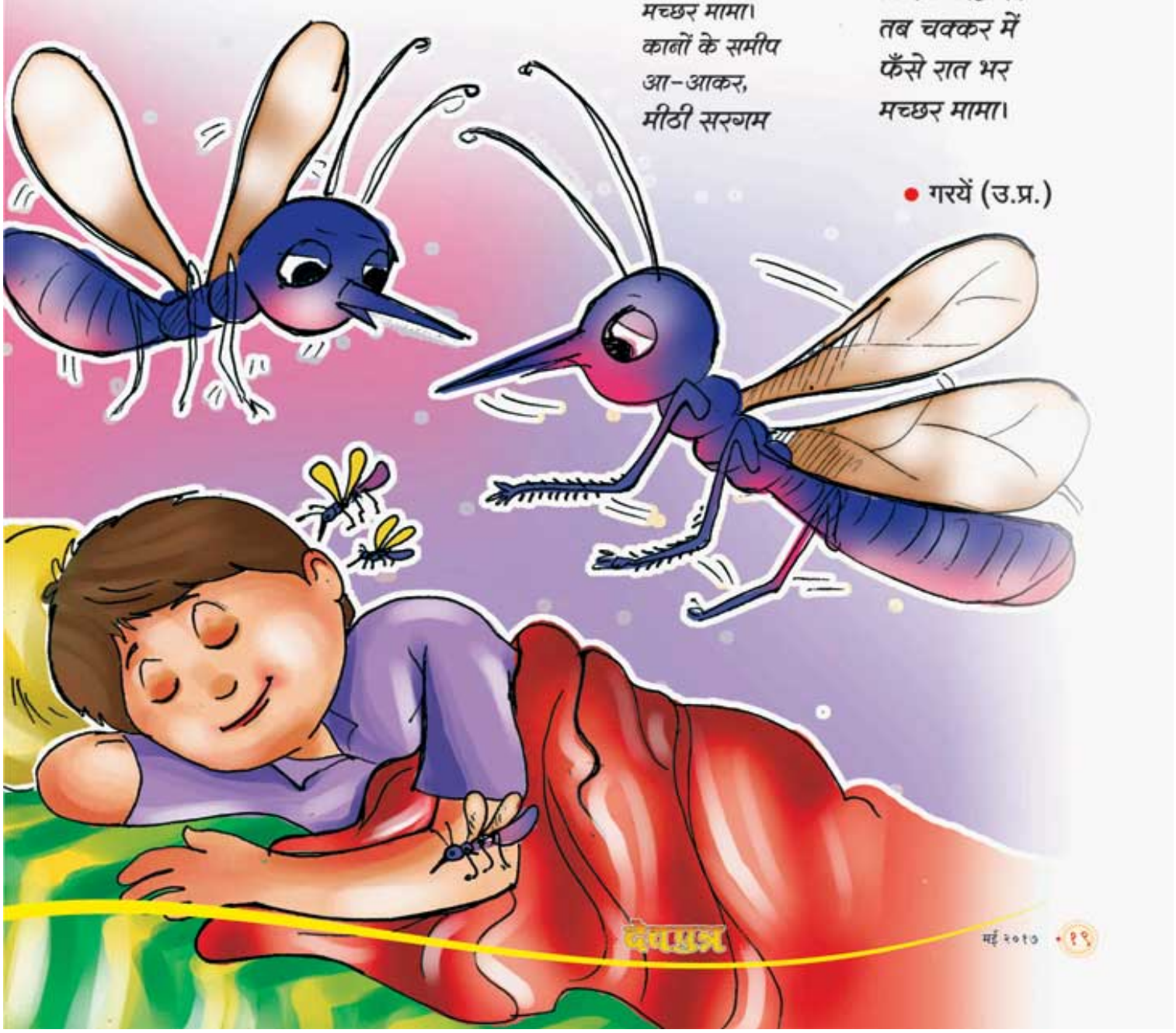

रास्ता बताइए

● चाँद मोहम्मद घोसी

समीर स्कूल की छुट्टी के बाद अकेला घर जाते समय अपने घर का रास्त भूल गया। शाम होने को आई है घर वाले समीर की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आप समीर को सही रास्ते से घर तक पहुँचाने में मदद तो कीजिए।

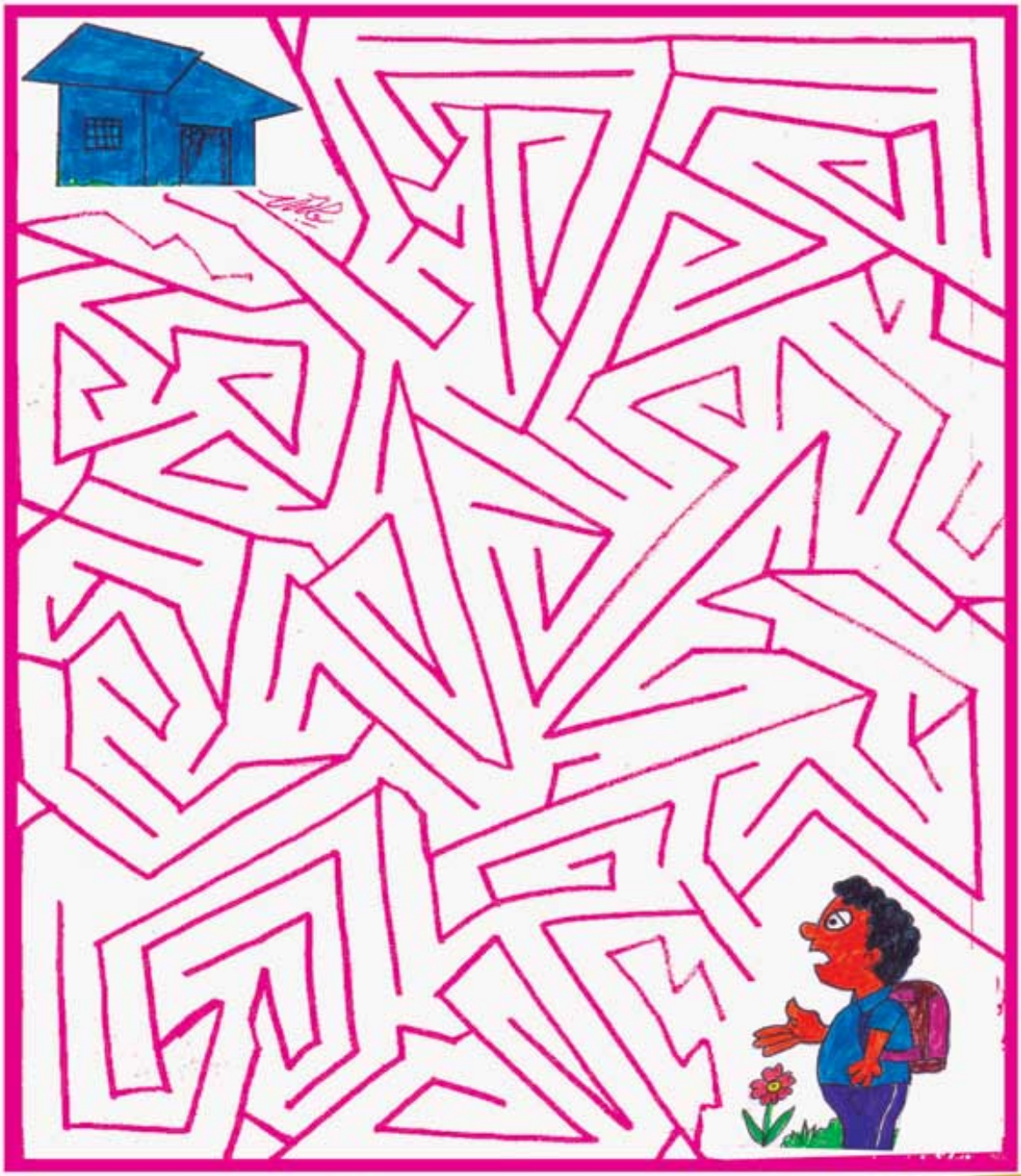

चुटकुले

◀ विष्णुप्रसाद चौहान

सोनू को रास्ते में एक पत्थर मिला। पत्थर पर लिखा था- ''मुझको पलट दो कुछ बन जाओगे।''

सोनू ने पत्थर को पलट दिया। नीचे लिखा था... बन गए न बेवकूफ।

****.

एक कंजूस को एक दिन करंट लग गया। पत्नी ने पूछा- ''आप ठीक तो है ना?''

कंजूस- फालतू की बात छोड़, पहले मीटर देख कर बता कितने यूनिट बिजली जल गई?

****

शिक्षक (मोनू से) भारत की सबसे खतरनाक नदी कौन सी है?

मोनू- ''भावना।''

शिक्षक - कैसे?

मोनू - क्योंकि सब इसमें बह जाते है।

****

सोनू एक कंपनी में इंटरव्यू देने गया। इंटरव्यू लेने वाला - जावा के चार वर्जन कौन-कौन से होते हैं?

सोनू- मर जावा, मिट जावा, लुट जावा और सदके जावा।

इंटरव्यू वाला - ''शाबाश तो फिर तुम सीधा घर जावा।''

****

रिश्ते वाले- जी, लड़की ने क्या किया हुआ है?

घरवाले - जी, नाक में दम।

****

शिक्षक (छात्र से) तुमने होमवर्क क्यों नहीं किया?

छात्र- क्योंकि हम तो हॉस्टल में रहते हैं।

****

शिक्षक (छात्र से) पांच सब्जियों के नाम बताओ।

छात्र - सूखी सब्जी के बताऊं या फिर झोल वाली के।

****

अगरबत्ती दो प्रकार की होती है एक भगवान के लिए, एक मच्छर के लिए।

लेकिन तकलीफ यह है कि भगवान आते नहीं और मच्छर जाते नहीं।

● ढाबला हरदू (म.प्र.)

सुधा गुप्ता 'अमृता' को पी-एच. डी. अवार्ड

जबलपुर। नगर की प्रतिष्ठित कवयित्री, कथाकार, बाल साहित्यकार एवं से. नि. राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षिका सुधा गुप्ता 'अमृता' को गत दिवस रानी दुर्गावती वि.वि. जबलपुर के २९वें दीक्षांत समारोह में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि प्रदान की गई। पं. कुंजीलाल दुबे प्रेक्षागृह के सभागार में आयोजित भव्य कार्यक्रम में म.प्र. के राज्यपाल सह कुलाधिपति मा. प्रो ओमप्रकाश जी कोहली एवं लोकायुक्त न्यायमूर्ति श्री उमेश चंद्र माहेश्वरी ने वि. वि. के कुलपति कपिल देव मिश्र जी की गरिमामय उपस्थिति में सुधा गुप्ता को 'हिन्दी साहित्य में स्वातंत्र्योत्तर बाल कविता का अनुशीलन–मध्य प्रदेश के संदर्भ में' विषय पर उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया।

कहानी लेखन कार्यशाला

सांवेर। दिनांक १८ मार्च २०१७ को डॉ. संजय प्रसाद के संयोजकत्व में सांवेर नगर के रचनाधर्मी बच्चों की लेखन कार्यशाला सम्पन्न हुई। कार्यशाला में डॉ. विकास दवे का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

शा. महाविद्यालय सांवेर में सम्पन्न इस कार्यशाला में प्राचार्य डॉ. सुधा सिलावट तथा डॉ. राजीव दीक्षित की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही।

समापन सत्र में क्षेत्रीय विधायक डॉ. राजेश सोनकर भी उपस्थित रहे।

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

शुल्क वृद्धि सूचना

आत्मीय ग्राहको !

आप सबका देवपुत्र के प्रति स्नेह और दुलार ही कारण है कि देवपुत्र अपने निरंतर प्रकाशन के ३७ वर्ष पूरे कर रहा है। इसके बहुरंगी कलेवर, सामग्री और साज सज्जा को पसंद करने के लिए हम आपके आभारी हैं।

कागज मुद्रण और प्रेषण की लागत में निरंतर वृद्धि से विवश होकर तीन वर्ष बाद एक बार पुनः इसकी सदस्यता दरों में वृद्धि करने का निर्णय हुआ है।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास की बैठक में लिए निर्णयानुसार आगामी सत्र से इसकी सदस्यता दरें इस प्रकार रहेंगी।

एक अंक	२०/- रु.
वार्षिक सदस्यता	१८०/-रू.
त्रैवार्षिक सदस्यता	५००/-रू.
पंचवार्षिक सदस्यता	७५०/-रू.
आजीवन सदस्यता	१४००/-रू.
सामुहिक वार्षिक सदस्यता (कम से कम १० अंक लेने पर)	१३०/-रू. प्रति सदस्य

आलोक :

- नगरीय विद्यालयों के लिए यह दरें १ जुलाई २०१७ से व ग्राम भारती के विद्यालयों (जिनकी सदस्यता जनवरी से आरंभ होती है) के लिए १ जनवरी २०१७ से लागू रहेंगी।
- संस्थाओं की आजीवन सदस्यता १० वर्ष रहेगी।
- सामूहिक सदस्यता वाले सारे अंक एक साथ भेजे जाते हैं।

- सदस्यता के लिए ड्राफ्ट/धनादेश 'देवपुत्र' के नाम से बनवाइए।
- आनलाईन बैंकिंग से प्राप्त शुल्क की जमापर्ची की छायाप्रति (फोटोकॉपी) भेजना अनिवार्य है।

हमारा विश्वास है कि आपका स्नेह एवं सहयोग पूर्ववत् प्राप्त होता रहेगा।

- संपादक

SURYA FOUNDATION

बी– 3/330, पश्चिम विहार, नई दिल्ली – 110063
Tel.: 011-25262994,25253681 Email: suryafnd@gmail.com Website: www.suryafoundation.net.in

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तु प्रशिक्षण के लिए अब एक जानी – मानी संस्था बन चुकी है। इसका प्रमुख उद्देश्य है देश के प्रति निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए तेजस्वी, लगनशील तु धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना।

संघ संस्कारों में पले – बढ़े, सामाजिक कार्यों में रूचि रखने वाले, शारीरिक रूप से सक्षम तरूणों के सूर्या फाउण्डेशन में प्रवेश हेतु निम्न **categories** में इंटरव्यू होगा–

CA, Engineers(IIT, NIT और Regional Engineering Colleges), MBA and Mass Communication

आयु 20–23 वर्ष। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 3 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के पश्चात 1 वर्ष की **On Job Training (OJT)/ {ractical & Campus Training (PCT)** होगी जिसके बाद पोस्टिंग दी जायेगी। वेतन निम्न प्रकार होगा:

Post	Experience	CTC
CA	Fresher	40,000 - 50,000
	5 years	60,000 - 75,000
	10 years & above	80,000 - 1,00,000
Engineer	B.Tech. (IIT)	50,000
	B.Tech. (NIT)	35,000
	B.Tech (REC)	20,000 - 25,000
MBA		15,000 - 20,000
Mass Communication (Media)		20,000 - 25,000
MCA, M.Sc., M.Com., M.A.		20,000 - 25,000
B.Com. with three years experience in accounts, purchase, store		15,000

(आवेदन पत्र अलग कागज पर हिंदी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें)

Affix latest Photograph here

पूरा नाम..... जन्मतिथि (अंकों में).....
पिता का नाम.....
पिता का व्यवसाय.....मासिक आय.....
भाई कितने हैं (आप को छोड़कर) ..... बहनें कितनी हैं ..... जाति..... वर्ग.....
विवाहित / अविवाहित .....
पढ़ाई का विवरण (Mark Sheet की फोटोकॉपी साथ जोड़ें).....
पत्र व्यवहार का पता.....पिन कोड.....
टेलीफोन नं.....मो.....ई-मेल.....

NCC/NSS/OTC/ITC/ शीत शिविर/PDC(कोई शिविर किया है तो उल्लेख करें).....शिविर में दायित्व सेवा भारती/ विद्या भारती / वनवासी कल्याण आश्रम के किसी विद्यालय/ छात्रावास या संघ या परिषद् अथवा विविध क्षेत्रों से संबंध रहा है तो कब और कैसे..... दायित्व.....
सूर्या परिवार में कोई परिचित है तो! नाम एवं विभाग.....
सूर्या फाउण्डेशन के इण्टरव्यू में पहले भाग ले चुके हैं तो वर्ष तथा कैडर का नाम.....

अपनी विशेष क्षमता, योग्यता, गुण एवं उपलब्धि अवश्य लिखें। इसके अतिरिक्त अपने विषय में कोई अन्य जानकारी देना चाहें तो अलग पेज पर लिखकर भेजें।

कृपया विस्तारपूर्वक बॉयोडाटा के साथ निम्न पते पर आवेदन करें। Category 1 के आवेदनकर्ता इसके अतिरिक्त अपना detailed CV भी साथ में भेजें।

विज्ञापन छपने के एक माह के अंदर आवेदन करें

ATTENTION

STUDENTS

Do Not Worry

Now there are 3 ways to do your home work.

Chart On Paper Size 25x35 cms.

Available 260 Titles.

M.R.P. ₹ 4.00 Each

My Home Work Sticker Chart (One Packet Containing Ten Charts)

Available 120 Titles.

M.R.P. ₹ 6.00 Each

Small Cut & Paste Book

Available 86 Titles.

M.R.P. ₹ 12.00 Each

PUBLISHED BY :

INDIAN BOOK DEPOT (MAP HOUSE)®

2937, BAHADURGARH ROAD, NEAR SADAR BAZAR, DELHI - 110006.

TEL.: 011- 23673927, 011- 23523635 • FAX : 011-23552096

B.O.: WH-78, MAYAPURI INDUSTRIAL AREA, PHASE-1, NEW DELHI-110064.

TEL.: 011-28111008, 28115454

E-mail : info@ibdmaphouse.com , Website : www.ibdmaphouse.com

DELHI-6

पुस्तक विक्रेता मूल्य सूची के लिए कृपया सम्पर्क करें।

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

www.mitva.in

mitva
Naya Daur - Nayi Raunak

एक रिश्ता
जो रौशन कर दे
आपकी जिंदगी

RAL
(निप्पो के को-प्रोमोटर)
प्रस्तुत करते हैं

मितवा
ऑफ-ग्रिड सोलर रेंज

- सोलर पैनल
- सोलर बैटरी
- सोलर डी.सी. फैन
- सोलर चार्ज कंट्रोलर
- सोलर इन्वर्टर
- सोलर स्ट्रीट-लाईट

अब सौर ऊर्जा से रौशन करें अपने घर, दुकान, अस्पताल व स्कूल

हमारी विश्वसनीय पोर्टेबल सोलर रेंज
जो दे आपको रौशनी, कहीं भी कभी भी

वितरक या विक्रेता बनके जुड़ें मितवा के सौर ऊर्जा दौर के साथ, अपनी आय को दें नई ऊँचाई, कॉल करें:
1800 1038 222 (सोमवार से शनिवार, 9:30 AM से 6 PM)

RAL
Global brands, Built on trust.

RAL Consumer Products Ltd. B-7/2, Okhla Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110020
Toll Free No.: 1800 1038 222 | Email : info@ral.co.in | www.ralindia.co.in

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान संपादक - कृष्णकुमार अष्ठाना